समर्पण

जिनकी दीक्षा के फलस्वरूप मुझे साहस व ज्ञान प्राप्त हो सका, उन अपनी पूज्य माता स्वर्गीया श्रीमती कस्तूरीदेवी जी को—

पुण्य स्मृति में

यह पुस्तक सादर समर्पित करती हूँ !

पुत्री—

'यश'

प्रस्तावना

संगीत-प्रेमी शिष्ट महिलाओं की सेवा में यह पुस्तक प्रस्तुत करते हुये मुझे हर्ष मिश्रित संकोच होरहा है। संकोच तो स्वाभाविक ही है क्योंकि कोई भी पुस्तक लिखने की योग्यता कभी प्राप्त नहीं की। एक कट्टर सनातनी मारवाड़ी परिवार में जन्म पाने के कारण अल्पायु में ही विवाह होने तथा गृहस्थ धर्म में उलझने से कोई भी उच्च-स्कूली शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं होसका। केवल साधारण से पत्र लिखने की योग्यता ही उस समय थी, जब दैवगति से गृहस्थी का पूर्ण बोझ केवल १८ वर्ष की आयु में मेरे ऊपर पड़ गया था। अपनी पूज्य माताजी के आदेशों व दीक्षा पर ध्यान रखकर मैंने अति साहस से अपने उत्तरदायित्व का निबाहा। माताजी के आशीर्वाद और भगवान की अनुकम्पा से कई वर्षों के कष्टपूर्ण जीवन के उपरान्त अब पूर्ण रूप से सुखी गृहस्थ के रूप में हूं।

इस परिस्थिति में मेरा अध्ययन व ज्ञान गृहस्थी के झंझटों के कारण कुछ काल तक वैसा ही सीमित रहा जैसा १ वर्ष की अवस्था में विवाह के समय था। इधर कुछ वर्षों से अपने ज्ञान के विकास का समय मिला। परिस्थिति व सामाजिक वातावरण के सहयोग से अपने हृदय के उमड़े हुये भावों को समाज के सामने रखने का अवसर प्राप्त हुआ। बाल्य-काल से ही विवाह आदि अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों से मुझे अरुचि थी। उनके भाव व भाषा के विरुद्ध मेरे मनमें विरोध की भावना पैदा होती रहती थी। कुछ गाने तो इतने अश्लील होते थे कि उनको मण्डप आदि के नीचे गाना मैं नारी जाति के लिये कलंक समझती थी। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर मैंने इन गीतों का निर्माण किया है। मैं जानती हूं कि छन्द नियम की दृष्टि से इन गीतों में अत्यधिक दोष होंगे और मैंने इन दोषों को दूर करने का कोई प्रयत्न भी नहीं किया है। वास्तव में गीतों की धुन आधुनिक प्रचलित कुछ फिल्मी धुनों के आधार पर ही रखने की चेष्टा की गई है ताकि बहनों को यह कर्णप्रिय होकर पसन्द आसके। इनको अधिक रूप से गाने योग्य बनाने के हेतु मैंने स्वरलिपियां भी दे दी हैं।

मुझे हर्ष है कि मेरा बाल्यकाल का एक स्वप्न आज साकार होरहा है। मुझे और भी हर्ष है कि इन गीतों को समाज के सम्मुख रखने का साहस मैंने जुटा पाया है। मुझे बहुत प्रसन्नता होगी यदि मेरी त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर महिला समाज मेरे इन गीतों को उचित अवसरों पर अपनायेगा। यदि किसी ने भी मेरे इन गीतों से लाभ उठाया तो मैं अपने आपको धन्य समझूंगी और अपने प्रयास को सफल।

'विष्णु-वाटिका'
[illegible]
विजयादशमी संवत् २०११ वि

अकिंचन
'पद्मा'

सरस्वती वन्दना

तार-तार में निकल रहे स्वर,
मानव का कल्याण लिए ।
जग को अमर मैत्री सुनाती
वीणा की मृदु तान लिए ॥

•

सुमन ही तो तेरी है मां
मन की वीणा मधुर हमारि ।
जगा हृदय की ज्योति अभी
गूंथी सुन्दर भावों की प्यारि ॥

•

सत्य, प्रेम की आभा से,
अन्तर मेरा विकसित करना ।
राग-द्वेष को दूर भगा कर,
मन मेरा निर्मल करना ॥

•

मंगलमय वरदान मिले,
करुणा का स्रोत हिय भरना ।
चिन्मयी तव गान करूं,
प्रेम अनुपम मुस्का भर दो ॥

•

जगत वन्दित ! वीणावादिनि !!
है अभिनन्दन तेरा ।
ये श्रद्धा के सुमन समर्पित
ले लो वन्दन मेरा ॥

श्रद्धा के सुमन

वीणापाणि सरस्वती

वीणापाणि सरस्वती

गायन-सूची

—

वनिता संगीत बिहार

स्वरलिपियों का चिन्ह परिचय

प	जिन स्वरों के ऊपर नीचे कोई चिन्ह न हो वे मध्य (बीचकी) सप्तक के शुद्ध स्वर हैं।
ध॒	जिन स्वरों के नीचे पड़ी लकीर हो, वे कोमल स्वर हैं; किन्तु कोमल मध्यम पर कोई चिन्ह नहीं होगा, क्योंकि कोमल म शुद्ध माना गया है।
मं	तीव्र मध्यम इस प्रकार होगा।
नि़	जिनके नीचे बिन्दी हो वे मन्द्र (पहिली) सप्तक के स्वर हैं।
सां	ऊपर बिन्दी वाले स्वर तार सप्तक के हैं।
प –	जिस स्वर के आगे जितनी–लकीर हों उसे उतनी ही मात्रा तक और बजाइये।
ग ऽ	जिस अक्षर के आगे ऽ चिन्ह जितने हों उसे उतनी ही मात्रा तक और गाइये।
धप	इस प्रकार से जहां या अधिक स्वर मिले हुए (सटेहुए) हों वे १ मात्रा में बजेंगे।
× | ०	× सम ० खाली । ताली के चिन्ह हैं।
,	यह चिन्ह स्वरलिपियों में या तानों में अलग–अलग टुकड़े दिखाता है।
●	ऐसा फूल जहां हो वहां पर १ मात्रा चुप रहना होगा।
⁀	स्वरों के ऊपर यह चिन्ह मींड देने के लिये होता है।
नि सा	इस प्रकार किसी स्वर के ऊपर कोई स्वर हो, तो ऊपर वाले स्वर को जरा सा छूते हुए नीचे के स्वर को बजाइये इसे कण कहते हैं।
(म)	इस प्रकार कोई स्वर ब्रैकिट में बन्द हो तो उसके आगे का स्वर और वह स्वर और पहिले का स्वर तथा फिर वही स्वर लेकर एक मात्रा में ही बजाइए जैसे (म) — पमगम।
~~	यह चिन्ह स्वरों के ऊपर जमजमा करने के लिये होता है, अर्थात् स्वरा का हिलाना चाहिये।

श्री विष्णु भगवान

"विष्णु पारिजात"—हलद्वानी।

बाई 'प्रेम-सुमन' बरसत में
गिरते जो मेरे मन मधुबन में।
साध यही थी इस जीवन में,
मस्तक चढ़ पाऊँ चरणन में॥

आरती

(ताल दादरा)

आई आरती करन "यश" है शंख चक्रधर की ।
अन्तरा—(१) भक्ति का लाई चंदन है प्रेम तुम्हें अर्पन ।
आई हूँ मैं शरण में भव विघ्न मनोहर की ॥
(२) कुछ पुष्प सजा कर मैं, प्रेम ज्योति जगाकर मैं ।
है आशा यही मन में पाऊँ कृपा नटवर की ॥
(३) ले ज्ञान की मैं बाती श्रद्धा के गीत गाती ।
छवि है बसी नयनन में जो मेरे प्रभुवर की ॥

वन्दना—

(बिना ताल के)

हे पूज्य भेंट मैं कर अभिनन्दन,
बारम्बार करूँ पद वन्दन ।
आओ जगतपति दुख भन्जन,
काटो अब "यश" के भव बंधन ॥

स्वरलिपि आरती (ताल दादरा)

×			०			×			०		
				मा	नि̣	सा	प	प	प	धु	प
				आ	ई	आ	ऽ	र	ती	ऽ	क
म	प	प	गु	गु	म	सा	–	गु	सागु	मप	म
र	म	ध	रा	ई	ऽ	शं	ऽ	ख	चऽ	ऽऽ	क्र
रे̣	सा	सा	–								
ध	र	की	ऽ								
				म	प	गु	–	म	नि धु	–	नि
				भ	ऽ	क्ति	ऽ	का	ला	ऽ	ई
धुनि	मां	सा	मां	मां	–	सां	नि	नि	सां	रें	–
चंऽ	ऽ	द	न	ह	ऽ	प्र	ऽ	म	तु	म्हें	ऽ

भजन

(ताल कहरवा)

आई हूँ मैं सरकार राग भक्ति का मैं गाने आई ।
झट पट खोलो द्वार प्रेम का दीपक जलाने आई ॥

अन्तरा—(१) कोटिन चन्द्र सहस्र उजियारे,
समझेंगे विरले तुम्ह सुधि धारे।
महिमा जगत करतार तुम्हारी सुन सुन सुनाने आई ॥

(२) ऐसी तो कुछ भी भक्ति न मुझ में,
रक्खूँगी क्या मैं चरण कमलों में ।
फिर भी हृदय का हार भेंट में लाई सजाने आई ॥

(३) द्वार पकड़ मैं खड़ी देखो कब से,
दर्शन करूँगी ये आशा है तब से ।
चुप क्यों रहे दातार नयनों की गागर छलकाने आई ॥

(४) देना न ठोकर कहीं कुछ समझकर,
अपनाओ मुझको अपना जानकर ।
'प्रेम' का है तुमको गुहार शीश चरणों में झुकाने आई ॥

×				×				×				×			
निसा	-सा	प	प	प	धु	म	प	गुम	गुम	-	सा	-	रे	गु	म
आऽ	ई	ऽ	हूँ	मैं	ऽ	स	र	काऽ	ऽऽ	ऽर	रा	ऽ	ग	भ	ऽ
गुरे	गुरे	मा	सा	सा	रे	गु	म	गुरे	गु	सा	-	निसा	-सा	प	प
क्तिऽ	ऽका	ऽ	मैं	गा	ऽ	ने	ऽ	आऽ	ऽ	ई	ऽ	झट	ऽप	ऽट	खो
प	धु	म	प	गुम	गुम	-	सा	-	रे	गु	म	गुरे	गुरे	सा	सा
ऽ	ल	दो	ऽ	द्वाऽ	ऽऽ	ऽर	प्रे	ऽ	म	का	ऽ	दीऽ	ऽपक	ऽ	ज
सा	रे	गु	म	गुरे	गु	सा	-								
ला	ऽ	ने	ऽ	आऽ	ऽ	ई	ऽ								

गु म धु नि	मधु निसां सां –सां	सां नि सां रें	नि मां धु प
को ऽ टि न	घंऽ ऽऽ दू ऽस	इ म उ नि	या ऽ रे ऽ
गुम –(नि)धु – नि	मधुनिसां –सां – सां	सां नि सां रें	नि मां धु प
सम ऽकैं ऽ गे	बिरऽऽ ऽहे ऽ तु	म्ह ऽ बु धि	बा ऽ र ऽ
निसा –ध प प	प धु म प	गुम गुम – मप	सा रे गु म
मदि ऽया ऽ न	ग त क र	ताऽ ऽऽ ऽर तु	म्हा ऽ री ऽ
गुरे गुरे सा सा	मप रे गु म	गुरे गु सा –	
मुनऽ ऽमु ऽम मु	सा ऽ ने ऽ	भाऽ ऽ ई ऽ	भाई हूँ मैं मल्हार

शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गावें।

भजन

[ताल कहरवा]

कली-कली में भाव हृदय के, गूँथ निराशा में आई,
भर कर प्रेम रंग की आभा सुन्दर माला ले आई।
नयनों में जादू था कैसा, खिंच के आज चली आई
'प्रिय' सब कुछ तो भूली हूँ बस याद तुम्हारी ले आई।

द्वार तुम्हारे आई हूँ चाहे ठुकरादो।
व्याकुल सी दौड़ी आई हूँ या तो मुसकादो॥
'पारिजात' के पुष्प तुम्हीं हो मन मन्दिर के देव तुम्हीं हो।
दीप भक्ति का लाई हूँ ज्योति का जगा दो॥
धन्य-धन्य मेरो जीवन हो, मुझ किंकर को प्रभू दर्शन हो।
आशा की कलियां लाई हूँ इन्हें फूल बनादो॥
'मरा' आई है अलख जगाने, आरती आज प्रभू की गाने।
वीणा में मन की लाई हूँ पल भर तो बजादो॥
ढूँढ रही मैं पल-पल तुमको प्रेम के जाल बिछाय हरि को।
नयनों का सागर लाई हूँ एक झलक दिखादो॥
तुम नहीं बनना दातारी कहलावे तुम जग भयहारी॥
झोली में खाली लाई हूँ कुछ तो भिक्षा दो॥

(ठका बन्द)																	
	ध	ध	-	म	म	ध	-	नि	धनि	सां	सां	-	सां	सां			
	क	ली	ऽ	ऽ	क	ली	ऽ	म	ऽऽ	ऽ	भा	ऽ	व	ह			
	सांगं	नि	निसां	निसां	सां	-	-	-	नि	-	नि	नि	नि	-	सां	-	
	दयऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	गूँ	ऽ	थ	नि	रा	ऽ	शा	ऽ	
	-	-	-	सांगं	नि	निसां	रें	सांनि	सां	धप	मप	-	म	प	प	ग	रें
	ऽ	ऽ	ऽ	मेंऽ	ऽ	आऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ईऽ	ऽऽ	ऽ	भ	र	क	र	प्रे
	गं	रें	सां	-	सां	नि	नि	निसां	रें	सां	ध	-	पम	प	-	-	सा
	ऽ	ऽ	म	ऽ	रं	ऽ	ग	कीऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	माऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सु
	-	सा	म	म	-	म	प	गम	-ग	गम	प	धरेंसा	निसा	-	-	-	
	ऽ	न्द	र	मा	ऽ	ला	ऽ	लेऽ	ऽऽ	आऽ	ऽ	ईऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	•	

ठेका शुरू—

×	×	×	×
साम म म	मप ग़ म प	मप ऩिप़ – प	ग़ ग़रे ग़म रे़सा
धाऽ र तु	म्हाऽ रे भा ई	हैंऽ ऽऽ ऽ भा	ई ठुक राऽ कोऽ
ऩिसा साम म म	मप ग़ म प	मप ऩिऱ – प	ग़ ग़र ग़म रे़सा
ऽऽ भाऽ कुम सी	दोऽ की भा ई	हैंऽ ऽऽ ऽ भा	तो मुम काऽ कोऽ
ऩिसा साम म म	मप ग़ म प	मप ऩिध़ – –	
ऽऽ धाऽ रे तु	म्हा रे भा ई	हैंऽ ऽऽ ऽ ऽ	
ग़ मप़ –प़ नि (ऩि)	सां मांसां सां मां	ऩिऩि ऩि ऩिऩि ऩिसां	पऩि सांऩि पप म
पा रिवा ऽव के	पु प्यनु म्ही हा	मन म फिर केऽ	दऽ बहु म्हीऽ हा
– साम म म	मप ग़ म प	मप ऩिप़ – प	ग़ ग़रे ग़म रे़सा
● बीऽ प म	फिऽ का स्म ई	हैऽ ऽऽ ऽ भा	ता मुम काऽ कोऽ
ऩिसा			
ऽऽ	धार तुम्हारे भाई हैं ।		

शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गावें।

ठप्पा शुरू—

×	×	×	×
			मा नि
			इ म
मा -प - प	प -धु - म	मप मप गु सा	सारे -गु - म
दर ऽशन ऽ का	भा ऽगे ऽ म	इऽ ऽऽ ऽ कि	रह ऽआम ऽ ला
रे -गु - रे	सा - - -		
ब ऽके ऽ ग	ह ऽ • •		

अन्तरा—

		नि गुम -धु - नि	धुनि,सां -सा - सां
		भाऽ ऽई ऽ भी	भाऽऽ ऽया ऽ क
सांनि -सां - रें	नि सा धु प	सप -प - प	प -धु - म
दीऽ ऽप ऽ सं	गा ऽ ध ऽ	ई ऽव ऽ धु	मे ऽघे ऽ प
मप मप गु मप	सारे -गु - म	रे -गु - रे	सा - सारे निसा
कऽ ऽऽ ऽ कि	रह ऽगम ऽ त	ब ऽके ऽ त	ह ऽ हांऽ ऽऽ
सारे -प - प	प -धु - म	मप मप गु मा	सारे -गु - म
हैऽ ऽव ऽ धु	मे ऽघ ऽ प	केऽ ऽऽ ऽ कि	रह ऽआवे ऽ त
रे -गु - रे	सा -		
ब ऽके ऽ ग	वे ऽ हम दर्शन - -		

शेष अन्तरे भी प्रथम अन्तरे के समान गायें।

भजन

[ताल कहरवा]

सब शक्तिमय कहाँ छिपी है शक्ति जीवन देने वाली ।
यह बगिया मुरझाय रही आ सींचो तुम जल सो माली ॥
अब न मुझे तरसाना हो मेरे ही मनके बसे तुम आना !
कब से हृदय के कपाट खुले हैं ।
मेरी नगरिया में आना, नगरिया में आना प्रभू मोरे आना ॥
जीवन बगिया के सलोने 'ऐ' माली ।
मन का कमल आ खिलाना, कमल आ खिलाना प्रभू मोरे आना ॥
ये नयना व्याकुल दर्शन को तरसें ।
आशा का दीपक जलाना हो दीपक जलाना प्रभू मोरे आना ॥
कहाँ छिपी करुणा ! करुणामय ।
करते हो क्यों जी बहाना, हो क्यों जी बहाना प्रभू मोरे आना ॥
कैसे विधाता भक्त के वत्सल ।
मुझको नहीं पहिचाना नहीं पहिचाना प्रभू मोरे आना ॥
रय तुम्हारे ही पद पदमों में ।
'यश' की लगन है लगाना, लगन है लगाना प्रभू मोरे आना ॥

(ठेका पन्द)

ध म म ध - ध नि ध ध धनि सां सा सांग नि सां - - -

स ऽ र्व श ऽ क्ति मय ऽ क हांऽ ऽ छि पीऽ ऽ है ऽ ऽ ऽ

नि - नि नि..निसां -नि नि सा निसा गंसा निध - पम प - -

श ऽ क्ति जी वनऽ ऽऽ दे ऽ नेऽ ऽऽ वाऽ ऽ लीऽ ऽ ऽ ऽ

म प प गं रें गं रेंसां सां - - नि - नि मां निसां गं मं

य ह ब गि या ऽ मुऽ र ऽ ऽ झा ऽ य र हीऽ ऽ

नि
ध - पम प - - मा - मा म म - म प गम -ग गर म

आ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ सी ऽ चो ऽ तुम ऽ ज ल साऽ ऽऽ माऽ ऽ

रेसा निसा - -

लीऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ

टप्पा शुरू—

×	×	×	×
मासा -सा प प	प ध्रि धु पम	मर -र - गु	मार -गु - प
धप ऽन ऽ मु	मे ऽ म रऽ	माऽ ऽना ऽ हो	मेऽ ऽरे ऽ री
मप -गु - सा	मा रे गु प	गुरेगु -गु मा मा	सा रे गु प
पन ऽक ऽ च	स ऽ गु म	माऽऽ ऽना ऽ च	से ऽ गु म
गु सा सा -			
मा ऽ ना ऽ			
गुम -धु - ध्रि	धुध्रिसां -सां - सां	ध्रि -सां - रें	ध्रिसां -ध्रि धु प
कब ऽम ऽ ह	रपऽऽ ऽक ऽ क	पा ऽर ऽ मु	सेऽ ऽऽ है ऽ
मा -मा प प	प ध्रि धु पम	मर -र - गु	मा र गु प
मा ऽरी ऽ न	ग रि धा मऽ	माऽ ऽना ऽ म	ग रि धा मे
गुरेगु -गु मा मा	मा रे गु प	गु सा मा -	
माऽऽ ऽना ऽ च	से ऽ गु म	मा ऽ मा ऽ	धप म गुम

शेष अन्तरे इन्हीं स्वरों पर चलेंगे।

भजन

(ताल दादरा)

नाव भँवर में है मनमोहन तुमसे दूर किनारा।
भवसागर के केवट तुम बिन कैसे पाऊँ सहारा॥

क्या हमने बिगाड़ा है क्या दूर भगाते हो।
मुस्कान छिपा के तुम क्या आज सिताते हो॥
मन में तो कभी से तुम चितचोर बसे हो जी।
एक बार इधर देखो क्यों नैन चुराते हो॥
तुम सामने होते तो मैं बन्द नजर करती।
छिपते ही जा रहे हो, नहिं सामने आते हो॥
चरणों में विक्षुब्ध तड़पूँ क्या फिर भी न जानोगे।
अब तक था भुलाया है, क्यों और भुलाते हो॥
तरिणी किधर है जाती क्या बेगम रहे 'नायिक'।
यह भूलभुलैयाँ क्यों प्रभु हमको दिखाते हो॥
हे देव बताओ यह, दुःखों का दलनकारी।
वह चक्र सुदर्शन क्यों तुम आज छिपाते हो॥
'मरा की व्यथा का तुमने अबतक प्रभू न जाना।
करुणेश ! करुणा का नहिं स्रोत बहाते हो॥

(ठेका बन्द)	ध	–	म	म	ध	ध	धि	ध	धनि	सां	सां	सां	मांगं	नि		
	ना	ऽ	व	भँ	व	र	में	ऽ	हैऽ	ऽ	म	न	मोऽ	ऽ		
सा	सां	–	–	नि	नि	नि	–	निसा	–नि	निगं	सा	निधु	–	पम	प	
ह	न	ऽ	ऽ,	तु	म्ह	से	ऽ	दूऽ	ऽऽ	रऽ	कि	नाऽ	ऽ	राऽ	ऽ	
–	– |	म	प	प	ग	रें	गं	रें	सां	–	नि	–	मां	सां	निसां	गंसां
ऽ	ऽ |	भ	व	सा	ऽ	ग	र	के	ऽ	ऽ	के	ऽ	व	ट	तुम	ऽऽ
निधु	–	पम	प	–	–	मा	म	म	प	गम	–ग	गर	म	गरे		
बिनऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कै	ऽ	से	ऽ	पाऽ	ऽऽ	ऊंऽ	स	हाऽ		
–	सानि	सा	–	–	– |										
ऽ	राऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ |										

म - - -			
रे ऽ ऽ ऽ			
	मर्मा -सा - सारें	नि र्मा नि प	म -व - म
	पऽ ऽन ऽ पऽ	मृ ऽ इ स	प्रे ऽम ऽ हा
प नि पनि सां	पनि -सां - सांर्म	गं रें र्मा रेंसां	पनि -सां - मांरें
ऽ र कोऽ ऽ	कोऽ ऽगा ऽ कऽ	र हा है ऽऽ	लाऽ ऽक ऽ हाऽ
नि नि प -	म -म प प	प नि पनि सां	मग -ग म रे
ऽ र को ऽ	प ऽक ऽ म	ह क पऽ स	पंऽ ऽमा ऽ हे
सा -			
रे ऽ हा न जाने न जाने			
	मर्मा -सां - सारें	नि सां नि प	मम -प - नि
	कऽ ऽन ऽ मऽ	हा ऽ मा इ	तव ऽह ऽ चि
पनि सा मा -	पनि -सां - सांर्म	गं रें सां रेंसां	पनि -सा - मारें
मुऽ ऽ दर ऽ	निर ऽग ऽ नऽ	हा ऽ क राऽ	काऽ ऽमा ऽ जऽ
नि - प -	म -म प प	प नि पनि सां	मग -ग म रे
गो ऽ मर ऽ	प ऽक ऽ म	ह क पऽ स	पंऽ ऽमा ऽ हे
सा -			
रे ऽ हा न जाने न जाने			
	मप -प - नि	प पप मग रे	सारे -रे म म
	मर ऽम ऽ र	कम ऽऽ मृ ऽ	नैऽ ऽना ऽ चि
मप पनि प -	पनि -सां - सांरें	सारें -सां प नि	सारें -सारें मग- गं
कऽ ऽऽ रे ऽ	चरऽ ऽवा ऽ गोऽ	सोऽ ऽऽ जी ऽ	कैऽ ऽसेऽ ऽऽऽ हा
सा रें - र्मा -	म -म प प	प नि पनि सां	मग -ग म रे
मे ऽ रे ऽ	प ऽक ऽ म	ह क पऽ स	पंऽ ऽमा ऽ हे
सा -			
रे ऽ हा न जाने न जाने			

भजन

(ताल कहरवा)

प्रभु के दरश को तरस रही अँखियाँ ।
तरस रही अँखियाँ बरस रही अँखियाँ । प्रभु के०
व्याकुल है अति मन मतवारा
फिरत निहारे नभ निहारा,
| चैन नहीं मोहे दिन रतियाँ ॥
छलक रही नयनों की गागर
उमड़ पड़ा करुणा के सागर
टेर रही रूप में मन बनिया ॥
कैसे व्यथा समझाऊँ ठाकुर,
यशः" तुम्हरे दर्शन का आतुर,
यों न छिपा रे नटवर छलिया ॥
झलक एक नयनन में पाऊँ,
जनम जनम की प्यास बुझाऊँ,
धन्य बनें या दर्शन अँखिया ॥

×				×				×				×			
नि	सा	ग	म |	पग	-प	-	ग	म	प	रे	ग	सा	रे	नि	सा
प्र	भु	के	द	रश	ऽको	ऽ	त |	र	स	र	ही	अँ	खि	यां	ऽ
नि	सा	ग	म	पग	-प	-	ग	म	प	रे	ग	सा	रे	सा	-सा
प्र	भु	के	द |	रश	ऽको	ऽ	त	र	स	र	ही	अँ	खि	याँ	ऽत
सा	मारे	प	प	पप	-ग	-	प	प	धु	प	धु	म	प	मग	म
र	सऽ	र	ही |	अँखि	ऽयां	ऽ	ब |	र	स	र	ही	अँ	खि	यांऽ	ऽ
								सा	रे	सा	-				
प्रभु के दरश को तरस रही								अँ	खि	यां	ऽ |				
												ग	म	ध	नि
							|					व्या	ऽ	कु	ल
धनि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	रें	नि	सां	धु	प	प	धु	नि	सां
हैऽ	ऽ	अ	ति |	म	न	म	त |	वा	ऽ	रा	ऽ	फ	र	त	नि

भजन

(ताल कहरवा)

आज बनी मैं हूँ बड़भागिन मो सम है न आन,
"पारिजात" में बस मेरे त्रिलोकी भगवान।
"नन्द-यशोदा" के ही तुम हो जीवन ज्योती प्रान
प्रेम ज्योति से है मन ज्योतित, बसो हृदय में आन॥

तुम्हीं हो करुणामय भगवान।
प्रभू जिसने अद्भुत हो मनहर, बैठे क्षीर सागर में प्रभुवर,
हो तुम पुरुष महान॥
कोई तुमको निर्गुण माने, कोई तुमको सगुण बखाने
जाने विरले सुजान॥
शिक्षा दे हो लोक शिक्षाकी, ना समझैं हम ऐसे अनाड़ी
कैसे पतित अज्ञान॥
भूखे हुए को राह दिखाते, रोते हैं जो उन्हें हँसाते
देकर पावन ज्ञान॥
भटकत फिरत अरे चंचल चित तू रट दे "यश" प्रभू को नित नित
हृदय बीच भगवान॥

(बिना ताल के)

ध – म म ध – नि ध धनि सां सा सां सांगं नि सां सा
आ ऽ ज ब नी ऽ मैं ऽ हूँऽ ऽ ब ड़ भाऽ ऽ गि न

– – नि – नि नि निसां –नि नि सा निसां गंसां निध – पम
ऽ ऽ मो ऽ स म हैऽ ऽऽ न ऽ ऽऽ ऽऽ आऽ ऽ ऽऽ

प – – म – प प गं रें गं रेंसां सा – – नि नि सा निसा
ऽ ऽ ऽन्द, पा ऽ रि जा ऽ ऽ ऽ तऽ म ऽ ऽ ब से ऽ ऽऽ

ग सा निध – पम प – – सा म म प गम –ग गप म गरे
ऽ मे रेऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ, त्रै ऽ लो ऽ कीऽ ऽऽ भऽ ग वाऽ

– सानि सा – – ध – म म ध – नि ध धनि सा सां –
ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽन्द, न ऽ द य शो ऽ दा ऽ केऽ ऽ ही ऽ

सांगं नि सां – – – नि – नि नि निसां –नि निसां गंसां निध
तुऽ म हो ऽ ऽ ऽ, जी ऽ व न ज्यो ऽऽ तीऽ ऽऽ प्राऽ

–	पम	प	–	–	म	–	प	प	ग़	रें	गं	रेंमां	मां	–	–	ऩि	मां
ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽन,	मे	ऽ	म	ग्या	ऽ	ऽ	ऽ	तिऽ	स	ऽ	ऽ	है	ऽ

ऩिसां	गं	मां	ऩिध	–	म	प	–	–	सा	सा	म	मप	ग़म	–ग़	ग़म
मऽ	ऽ	न	ग्याऽ	ऽ	ति	द	ऽ	ऽ,	क	सो	ऽ	हऽ	पमऽ	ऽऽ	मऽ

म	रे (ध)	–	साऩि	सा	–	–	–
ऽ	ग्या	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन

ठेका एक—

×				×				×				×			
			रे	ऩि	सा	रे	म	सा	ग़	ध	प	ग़	म	ध	ऩि
			तु	म्ही	ऽ	हो	ऽ	क	रु	णा	ऽ	म	य	भ	ग
सा	–	–													
वा	ऽ	ऽन													
			–	ऩि	सा	प	प	प	ध	म	प	ग़	ग़	मग़	मप
			•	प्र	भू	कि	त	ने	ऽ	ब	ड़	गु	न	होऽ	ऽऽ
रे	सा	सा	सा	ग़	म	ध	ऩि	मध	ऩिसां	सां	सां	सां	ऩि	ऩिसां	रें
म	न	ह	र	बै	ऽ	ठ	ऽ	बीऽ	ऽऽ	र	सा	ग	र	मऽ	ऽ
ऩि	सां	ध	प	सा	प	प	प	प	ध	म	प	ग़	म	–	–
प्र	भु	व	र	हो	ऽ	तु	म	पु	र	प	म	हा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग़ (ध)	म	प	सा	प	प	प	प	ध	म	प	मग़	–म	––	
ऽ	ऽ	ऽ	ऽन	हो	ऽ	तु	म	पु	र	प	म	हाऽ	ऽऽ	ऽन	तुम्ही

हो करुणामय भगवान।

शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गायें।

भजन

(ताल कहरवा)

कहो तुम कहाँ छिपे चितचोर ।
प्रभु मैं ढूँढ़ ढूँढ़ फिरी चहुँ ओर ॥
कहाँ बसे तुम प्राणों के स्वामी कहीं बसे मन मोर ॥
कहीं तो ढूँढ़ ही लूँगी मैं तुमको, रहो किसी भी ओर ॥
पाऊँ कभी तुमको मूर्ख से बांधू नयन की डोर ॥
आतुर हो कब से "प्रेम" है पुकारे सुनो तो मेरी ओर ॥
जो कुछ भी हूँ पर हूँ तो तुम्हारी यों न छिपो चितचोर ॥

×				×				×				×			
			ग़ु	म	प	गुरे	गु	सारे	-रे	म	म	पधु	म	प	मा
			क	हो	ऽ	तुऽ	म	कऽ	ऽहाँ	ऽ	छि	पेऽ	ऽ	चि	त
पधु	मप	-	ग़ु	म	प	गुरे	गु	सारे	-रे	म	म	पधु	म	प	स
चोऽ	ऽऽ	ऽर	प्र	भू	ऽ	मैंऽ	ऽ	ढूंऽ	ऽढ़	ऽ	फि	रीऽ	ऽ	च	हुँ
पधु	मप	-													
चोऽ	ऽऽ	ऽर													
			-	मप	-प	नि	नि	नि	सां	सां	सां	पनि	-पनि	रें	सां
			•	कऽ	ऽहाँ	ऽ	ब	से	ऽ	तु	म	प्राऽ	ऽणोंऽ	ऽ	के
धु	प	प	-	मप	-प	गं	गं	रें	नि	निसां	रेंसां	पधु	मप	-	
स्वा	ऽ	मी	ऽ	कऽ	ऽहीं	ऽ	ब	से	ऽ	मऽ	नऽ	मोऽ	ऽऽ	ऽर	

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

भजन

[ताल दादरा]

प्रभू को तू अपने मनाये चली जा।
लगन उनमें अपनी लगाये चली जा॥
निहारे हूँ बाट मैं कबसे उन्हीं की
तू आशा की कलियाँ खिलाये चली जा॥
कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेगी,
तू श्रद्धा के फूल चढ़ाये चली जा॥
कहीं भी रहूँ पर रहे ध्यान उन पर,
तू प्रेम की ज्योति जगाये चली जा॥
रहे नाम उनका हर श्वांसा में तेरे
तू भक्तों के रागों को गाये चली जा॥
मिलेंगे हरी "यश" जीवन के दीपक
प्रतीक्षा की घड़ियाँ बढ़ाये चली जा॥

×			×			×			×		
				प	-	ग़	म	गुम	पत्रि	प	-
				प्र	S	भू	S	काS	SS	तू	S
गु	म	गुरे	सा	रे	-	नि	मा	ग (म)	-	म	-
अ	प	नेS	S	म	S	ना	S	ये	S	च	S
गुम	प	प	-	प	-	गु	म	गुम	पत्रि	प	-
लीS	S	जा	S	ल	S	ग	म	उनS	SS	में	S
गु	म	गुरे	सा	रे	-	नि	मा	ग (म)	-	म	-
अ	प	नीS	S	ल	S	गा	S	य	S	च	S
गुम	प	प	-								
लीS	S	जा	S								
				म	प	पर्सां	नि	नि	-	नि	-
				नि	S	हा	S	र	S	हूँ	S

नि	-	नि	-	नि	-	प	नि	पनि	सांरें	सां	-
घा	ऽ	ट	ऽ	मैं	ऽ	फ	ब	सेऽ	ऽऽ	ब	ऽ
निसां	नि	प	प	प	-	ग॒	म	ग॒म	पनि	प	-
कीऽ	ऽ	की	ऽ	तू	ऽ	मा	ऽ	याऽ	ऽऽ	की	ऽ
ग॒	म	ग॒रे	मा	रे	-	नि॒	सा	म ग॒	-	म	-
क	खि	योऽ	ऽ	खि	ऽ	ता	ऽ	थे	ऽ	च	ऽ
ग॒म	प	प	-								
कीऽ	ऽ	जा	ऽ	प्रभु को तू--							

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान चलेंगे)

भजन

(ताल कहरवा)

मेरा नहीं है ठिकाना—नहीं भटकाना हो प्रभू आई शरण में ॥
श्रद्धा के फूल चढ़ाने मैं आई,
इनको नहीं ठुकराना—नहीं ठुकराना हो प्रभू आई शरण में ॥
मनमें जगा के प्रेम की ज्योति
मैंने तुम्हें पहचाना—तुम्हें पहचाना हो प्रभू आई शरण में ॥
म प्यासे नयना दर्शन का आकुल
प्रतीक्षा अधिक न कराना—अधिक न कराना हो प्रभू आई शरण में ॥
'पद्मा' आई 'मनहर' द्वार तुम्हारे
प्रेम की डोरी बनाना—हो डोरी बनाना हो प्रभू आई शरण में ॥
दूर हूँ अब तक करुणामय तुमसे
करुणा का स्रोत बहाना—हां स्रोत बहाना हो प्रभू आई शरण में ॥

×	×	×	×
साग —ग — ग	गम —प — पध	मपम —ग रे ग	गम —प — पध
मेऽ ऽरा ऽ न	हीऽ ऽहै ऽ ठिऽ	काऽऽ ऽना ऽ न	हीऽ ऽहै ऽ ठिऽ
मप,म —ग रे रे	ग म प पध	मप म ग रे	रे —म ग रे
काऽऽ ऽना ऽ न	ही ऽ भ टऽ	काऽ ऽ ना ऽ	हो ऽऽ प्र भू
नि —स ग रे	प नि सा —		
आ ऽई ऽ श	र ण में ऽ		
ग —ग प प	निध —,धनि र्सा सा	नि —नि — प	प र्म प —
श्र ऽद्धा ऽ के	फूऽ ऽलऽ ऽ च	ढ़ा ऽने ऽ मैं	आ ऽ ई ऽ
साग —ग — ग	ग म प पध	मप,म —ग रे ग	ग म प पध
इनऽ ऽको ऽ न	ही ऽ ठु कऽ	राऽऽ ऽना ऽ न	ही ऽ ठु कऽ
मप म ग रे	रे —म ग रे	नि —सा ग रे	प नि सा —
राऽ ऽ ना ऽ	हो ऽऽ प्र भू	आ ऽई ऽ श	र ण में ऽ

मेरा नहीं है ठिकाना——

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाइये।)

नि॒	–	नि॒	–	नि॒	–	प	नि॒	पनि॒	सांरें	सां	–
बा	ऽ	ट	ऽ	मैं	ऽ	क	ब	सेऽ	ऽऽ	ब	ऽ
नि॒सां	नि॒	ध	प	प	–	ग॒	म	ग॒म	पनि॒	प	–
नींऽ	ऽ	की	ऽ	तू	ऽ	आ	ऽ	शाऽ	ऽऽ	की	ऽ
ग॒	म	ग॒रे	सा	रे	–	नि॒	मा	म ग॒	–	म	–
क	ठि	नोंऽ	ऽ	कि	ऽ	का	ऽ	म	ऽ	ब	ऽ
ग॒म	प	प	–								
कोऽ	ऽ	आ	ऽ	प्रभू को तू	–						

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

नि	–	सि	–	नि	–	प	नि	पसि	स्वरें	सां	–
बा	ऽ	ट	ऽ	मैं	ऽ	क	ब	सेऽ	ऽऽ	ब	ऽ
निसां	नि	प	प	प	–	गु	म	गुम	पनि	प	–
नींऽ	ऽ	को	ऽ	नू	ऽ	भा	ऽ	गाऽ	ऽऽ	की	ऽ
गु	म	गुरे	सा	रे	–	नि	सा	म गु	–	म	–
क	हि	यांऽ	ऽ	खि	ऽ	या	ऽ	ये	ऽ	च	ऽ
गुम	प	प	–								
कौऽ	ऽ	ना	ऽ	प्रभू को तू							

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

ज़ि	–	ज़ि	–	ज़ि	–	प	ज़ि	पज़ि	सांरें	सां	–
बा	ऽ	ट	ऽ	मैं	ऽ	क	ब	सेऽ	ऽऽ	ठ	ऽ
ज़िसां	ज़ि	ध	प	प	–	गु	म	गुम	पज़ि	प	–
मीऽ	ऽ	की	ऽ	तू	ऽ	भा	ऽ	शाऽ	ऽऽ	की	ऽ
गु	म	गुरे	सा	रे	–	ज़ि	सा	म गु	–	म	–
क	छि	पांऽ	ऽ	खि	ऽ	खा	ऽ	पे	ऽ	च	ऽ
गुम	प	प	–								
बीऽ	ऽ	प्या	ऽ प्रभू का तू								

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

———

भजन

(ताल कहरवा)

मेरा यही है ठिकाना—नहीं भटकाना हो प्रभु आई शरण में ॥
भक्ति के फूल चढ़ाने मैं आई,
उनको नहीं ठुकराना—नहीं ठुकराना हो प्रभु आई शरण में ॥
मनमें जगा के प्रेम की ज्योति
मैंने तुम्हें पहचाना—तुम्हें पहचाना हो प्रभु आई शरण में ॥
ये दोनों नयना दर्शन को आकुल,
इनको अधिक न तरसाना—बहुत न तरसाना हो प्रभु आई शरण में ॥
'सरो' आई 'मनहर' द्वार तुम्हारे
प्रेम की डोरी बनाना—हाँ डोरी बनाना हो प्रभु आई शरण में ॥
दूर हैं अब तक करुणामय तुमसे,
करुणा का स्रोत बहाना—हाँ स्रोत बहाना, हो प्रभु आई शरण में ॥

×				×				×				×			
साग	–ग	–	ग	गम	–प	–	पध	मपम	–ग	रे	ग	गम	–प	–	पध
मेऽ	ऽरा	ऽ	य	हीऽ	ऽहै	ऽ	ठिऽ	काऽऽ	ऽना	ऽ	न	हीऽ	ऽहै	ऽ	ठिऽ
मप,म	–ग	रे	रे	ग	म	प	पध	मप	म	ग	रे	रे	–म	ग	रे
काऽऽ	ऽना	ऽ	न	हीं	ऽ	भ	टऽ	काऽ	ऽ	ना	ऽ	हो	ऽऽ	प्र	भू
नि	–सा	ग	रे	प	नि	सा	–								
आ	ऽई	ऽ	श	र	ण	मे	ऽ								
ग	–ग	प	प	निध	–,पनि	सां	सा	नि	–नि	–	प	ध	मं	प	–
भ	ऽक्ति	ऽ	के	फूऽ	ऽलऽ	ऽ	च	ढ़ा	ऽने	ऽ	मैं	आ	ऽ	ई	ऽ
साग	–ग	–	ग	ग	म	प	पध	मप,म	–ग	रे	ग	ग	म	प	पध
उनऽ	ऽको	ऽ	न	हीं	ऽ	ठु	कऽ	राऽऽ	ऽना	ऽ	न	हीं	ऽ	ठु	कऽ
मप	म	ग	रे	रे	–म	ग	रे	नि	–सा	ग	रे	प	नि	सा	–
राऽ	ऽ	ना	ऽ	हो	ऽऽ	प्र	भू	आ	ऽई	ऽ	श	र	ण	मे	ऽ

मेरा यही है ठिकाना ......
(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाइये ।)

ध॒	प	नि॒	–	सां	–	ध॒	–	प	प	–	–
मा	ऽ	थे	ऽ	को	ऽ	भा	ऽ	ऽ	हुर	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	प	प	–	ध	ध॒	म	–	प	–
क	ह	हो	ऽ	मे	ऽ	रे	ऽ	हो	ऽ	ये	ऽ
ग॒	ग॒	मा	ग॒	प	म	रे॒	–	सा	नि॒	सा	–
म	न	की	ऽ	सी	ऽ	बा	ऽ	त	है	ऽ	ऽ

क्यों मान रूठे हो मोहन

(शेष अन्तरे इन्हीं स्वरों पर बजायें)

नि	सा	सा	प	प	धु	म	प	गु	मग	सागु	मप	रे	सा	सा	–
नै	ऽ	नों	ऽ	से	ऽ	तु	म	क्यों	ऽ	मोड़	ऽऽ	मु	ख	हा	ऽ
गु	म	धु	नि	मधु	निसां	मं	मं	मंरें	सांनि	सां	रें	नि	सां	धु	प
स	मी	मु	ख	सेऽ	ऽऽ	म	मू	कऽ	रऽ	के	ऽ	छु	प	हा	ऽ
सा	सा	प	प	प	धु	म	प	गुम	गुम	–	–	मग	म गु	म	प
छि	पे	ऽ	छु	वे	ऽ	हा	सु	प्याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन
मा	सा	प	प	प	धु	म	प	गुम	गुम	–	रे	नि	सा	रे	म
छि	पे	ऽ	छु	प	ऽ	हो	सु	प्याऽ	ऽऽ	ऽन	आ	मे	ऽ	र	ऽ
सा	गु	धु	प	गु	म	रे	नि	मा	–	–					
आ	ऽ	दू	ऽ	ग	र	म	ग	आ	ऽ	ऽन	ओ मेरे जादूगर				

(शेष अन्तरे इसी अन्तरे के समान गावें)

×	×	×	×
मप -प - प	पप -धु प धु	मप -म नि धु	प -म सा गु
धुर ऽके ऽ से	मन ऽमें ऽ च	छेऽ ऽपा ऽ ते	हो ऽऽ यरा के
मप -प - प	प -धु प धु	मप -म नि धु	प -म
चित ऽके ऽ चु	रा ऽके ऽ च	छेऽ ऽपा ऽ ते	हो ऽऽ
प धु	धुनि -नि - नि	पनि -नि - नि	मप -म नि धु
ह न	भौंरि ऽयन ऽ की	साऽ ऽच ऽ मि	टीऽ ऽन ऽ क
प - प धु	नि -नि रें रें	गेंरें -गें रें गें	निसां -निसां गें रें
मी ऽ बि न	पा ऽये ऽ ही	छिपऽक र च	छेऽ ऽपाऽ ते ऽ
सां - गु म	मप -प - प	पप -धु प धु	मप -म नि धु
हा ऽ धुर के	धुर ऽके ऽ से	मन ऽमें ऽ च	छेऽ ऽपा ऽ ते
प -म			
हा ऽऽ धुरके धुरके --			

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के स्वरों पर गाइये)

ठप्पा शुरू—

मा नि॒	साप –सा प प	प –ध॒ प ध॒	म – म प
म नी	मोऽ ऽहन ऽ तुम	कै ऽसे ऽ चित	चो ऽर नि क
मप ध॒नि॒ ध॒ प	ग॒रे –ग॒ – मा	– रे ग॒ म	ग॒रे ग॒ सा रे॒
सेऽ ऽऽ प्र मू	तोऽ ऽक ऽ मो	ऽ वि की ऽ	चोऽ ऽर नि क
सा –			
से ऽ			
– –	ग॒ म ध॒ नि॒	ध॒नि॒ सां –सां – सां	नि॒ –सां – रें॒
• •	मो ऽ म नि	मेऽऽ ऽरा ऽ म	नं ऽत ऽ पि
नि॒ सा ध॒ प	ग॒म –ध॒ (नि॒) – नि॒	ध॒नि॒,सां –सां – सां	नि॒ –सां – रें॒
पा ऽ ता ऽ	कैऽ ऽसे ऽ ए	पाऽऽ ऽक ऽ हो	म ऽखों ऽ के
नि॒ सां ध॒ प	मा –सा प प	प –ध॒ प ध॒	म – म प
त्रा ऽ ता ऽ	तुम ऽगो ऽ म	के ऽसी ऽ क	ठो ऽर नि क
मप ध॒नि॒ ध॒ प	ग॒रे –ग॒ – सा	– रे ग॒ म	ग॒रे ग॒ सा रे॒
सेऽ ऽऽ प्र मू	तोऽ ऽक ऽ मी	ऽ वि की ऽ	चोऽ ऽर नि क
सा – मनी मोहन तुम			
से ऽ			

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजायें)

–	रे	प	प	मप	प	म	ग	रे	म	–	प	नि	–	सां	सां
ऽ	जा	ऽ	ये	नैऽ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	कै	ऽ	म	हो	ऽ	तु	म
–	प	पनि	नि	निसां	–प	पनि	सांरें	–	परें	रें	रें	रें	–	मं	रें
ऽ	मा	मऽ	रि	बैऽ	ऽऽ	बाऽ	ऽऽ	ऽ	बाऽ	र्ह	म	रे	ऽ	क	ऽ
सांरें	मंगं	गं	सां	रें	नि	मां	–	–	पनि	नि	नि	नि	मां	नि	सां
एसऽ	ऽऽ	प	र	मी	ऽ	तो	ऽ	ऽ	हाऽ	य	रा	का	ऽ	वि	म
पनि	सारें	सांरें	निसां	पनि	प	–	पध	पध	–प	मग	म	रे	रे	प	म
पाऽ	ऽऽ	येऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	कऽ	हांऽ	ऽऽ	किऽ	म	ऽ	चो	र	म
रे	ग	सा	नि	सा	–	–	नि	प	नि	मा	रेग	मारे	रे	प	म
मू	ऽ	मा	ऽ	थे	ऽ	ऽ	क	हा	ऽ	तु	मऽ	ऽऽ	क्यों	ऽ	न
म रे	ग	सा	नि	सा	–	–	नि	नि	सां	नि	सां	प	प	नि	नि
ही	ऽ	मा	ऽ	प	ऽ	ऽ	क	हो	ऽ	तु	म	ऽ	क्यों	ऽ	न
सा	–	पनि	सारें	निं	प	प	पध	पध	–प	मग	म	रे	रे	प	म
ही	ऽ	माऽ	ऽऽ	पे	ऽ	ऽ	कऽ	होऽ	ऽऽ	तुऽ	म	ऽ	क्यों	ऽ	न
म रे	ग	सा	नि	सा	–	–	नि	प	नि	सा	रेग	मारे	रे	प	म
ही	ऽ	मा	ऽ	थे	ऽ	ऽ	म	मू	ऽ	तु	मऽ	ऽऽ	क्यों	ऽ	न
म रे	ग	सा	नि	मा	–	–									
ही	ऽ	मा	ऽ	प	ऽ	ऽ									

म	ध	प	–	प	प	नि	ध	नि	र्सा	र्ग	रें
ज	प	कि	ऽ	म	प	ना	ऽ	में	मे	रे	ऽ
ग़ि	ग़ि	ध	प	प	–	प	ग़ि	ग़ि	ग़ि	ग़ि	–
इ	स	मे	ऽ	द्	ऽ	री	ऽ	है	म	या	ऽ
ध	मांग़ि	ध	प	प	प	ग	ग	म	गम	धप	प
मु	मऽ	का	ऽ	य	ह	कि	म	क	मृऽ	ऽऽ	र
ग़ु	र	मा	–								
की	ऽ	है	ऽ	माना कि मैंने… …							

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान चलेंगे)

देवी जी का गीत

(ताल कहरवा)

गौरी पूजन करें हम आज मंदिर जायें री।
मन की वीणा आज बजायें जायें द्वारे अलख जगायें॥
उनको रिझायें री हां मंदिर जायें री।
नयनों की गंगा जल झारी, प्रेम के रंग रंगी है सारी॥
उन्हें न्हायें री हां मंदिर जायें री।
सजा अर्चना की हम थाली, माथ सिंदूर चढ़ायें आली।
दर्शन पायें री, हां मन्दिर जायें री॥
पुष्प हृदय की भेंट चढ़ायें मैया की आरति गायें।
दीप जलायें री हां मन्दिर जायें री॥
आज पसारे आँचल जायें मनभाया वर उनसे पायें।
चलो मनायें री, हां मन्दिर जायें री॥

×								×							
						मा	नि	सा	–ग	–	ग	ग	मं	प	ध
						गा	री	पू	ऽजन	ऽ	क	रें	ऽ	ह	म
पर्म	प	मंग	ग	ग	मं	प	ध	पर्म	प	ग	रे	ऐरे	गरे	सा	नि
आऽ	ऽ	ऽऽ	ज	म	ऽ	दि	र	जाऽ	ऽ	यें	ऽ	रीऽ	ऽऽ	गा	री
सा	–ग	–	ग	ग	–	–	–								
पू	ऽजन	ऽ	क	रें	ऽ	ऽ	ऽ								
सां	निध	धनि	रमा	निध	नि	पर्म	प	गम	गर	ग	प	र	गरे	सा	–
म	नऽ	कीऽ	ऽऽ	बीऽ	ऽ	णाऽ	ऽ	आऽ	ऽऽ	ज	ब	जा	ऽऽ	यें	ऽ
नि	ध	धनि	रमा	निर	नि	प	–	ग	र	ग	प	र	गर	सा	–
जा	ऽ	यैंऽ	ऽऽ	द्वाऽ	ऽ	रे	ऽ	अ	ल	ख	ज	गा	ऽऽ	यें	ऽ
सां	ध	धनि	रमा	निग	निर	प	–	ग	र	ग	प	रे	गरे	सा	नि
जा	ऽ	यऽ	ऽऽ	द्वाऽ	ऽऽ	र	ऽ	अ	ल	ख	ज	गा	ऽऽ	यें	ऽ
सा	–ग	–	ग	ग	मं	प	ध	पर्म	प	ग	ग	ग	मं	प	ध
उन	ऽको	ऽ	रि	झा	ऽ	यें	ऽ	रीऽ	ऽ	ऽ	हां	मं	ऽ	दि	र
पर्म	प	ग	रे	ऐरे	गर										
जाऽ	ऽ	यें	ऽ	रीऽ	ऽऽ	गौरी पूजन कर — —									

शेष अन्तरे भी प्रथम अन्तरे के समान गाये जायेंगे।

देवी जी का गीत

(ताल कहरवा)

महिमा अमित तुम्हारी भवानी मेरी।
मन की व्यथा को कैसे कहूं तुम्हरी कृपा मैं क्या कर पाऊं।
आई हूं शरण तुम्हारी भवानी मेरी॥
भाव भक्ति से तुमको पाऊं क्या लेकर मैं सम्मुख आऊं?
दासी मैं हूं तुम्हारी भवानी मेरी॥
क्या मैं दया की हूं अधिकारी मन में लेकर आशा भारी।
आके द्वार पुकारी, भवानी मेरी॥
अमर आशीष मां मंगलकारी बरसा आंचल आज हमारो।
लेने आई भिखारी, भवानी मेरी॥
एक मस्तक मम माथ दियाशा, मम सुधा की धार बहाओ।
गाऊं मैं महिमा तुम्हारी, भवानी मेरी॥

×				×				×				×			
	ध	ग	ग	ग	रे	ग	म	रेग	ग	मा	सानि	मा	रे	मानि	सा
	म	हि	मा	अ	मि	त	तु	म्हाऽ	री	ऽ	भऽ	वा	नी	मेऽ	री
-															
ऽ															
	सासा	ग	ग	गमं	-	गमं	पप	-	मं	प	ध	मं	प	गम	रग
	मन	की	व्य	थाऽ	ऽ	काऽ	ऽऽ	ऽ	कै	से	क	हा	ऽ	ऊंऽ	ऽऽ
-	सासा	ग	ग	गमं	-	गमं	पप	-	मं	प	प	मं	प	गम	रेग
ऽ	तुम्ह	री	कृ	पाऽ	ऽ	मैंऽ	ऽऽ	ऽ	क्या	क	र	पा	ऽ	ऊंऽ	ऽऽ
-	धग	धग	ग	ग	रे	ग	म	रेग	ग	सा	सानि	सा	रे	सानि	सा
ऽ	आऽ	ईऽ	हूं	श	र	ण	तु	म्हाऽ	री	ऽ	भऽ	वा	नी	मेऽ	री
-															
ऽ महिमा अमित															

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

देवी जी का गीत

(ताल कहरवा)

ओ मइया ! मंगल दो वरदान ।

तुमसे जगमग यह जग शीतल, भरती सुख सम्पति जन आँचल ।
जग की हो तुम प्रान ॥

भाव भक्ति से जिसने ध्याया, करुणामयि ने स्नेह बढ़ाया ।
दे दे उनको ज्ञान ॥

बड़े-बड़े हैं दुराचारी, बन जाते दर्शन अधिकारी ।
करके सुमिरन ध्यान ॥

आ जाये दरबार में खाली, कभी नहीं जाये वह खाली ।
राजा रंक समान ॥

जिस पर रहे तुम्हारा साया वहाँ न रहती दुख की छाया ॥
ऐसी दया निधान ॥

×				×				×				×			
			रे	ऩि	सा	रे	म	सा	ग	ध	प	ग	म	रे	(सा)ऩि
			ओ	मै	ऽ	या	ऽ	म	ऽ	ग	ल	दो	ऽ	व	र
सा	-	-	रे					सा	-	-	-				
दा	ऽ	ऽन	ओ	मैया मंगल दो वर				दा	ऽ	ऽ	ऽन				
ऩि	सा	प	-	प	ध	म	प	ग	सा	ग	पम	(ग)रे	-	सा	सा
तु	म	से	ऽ	ज	ग	म	ग	य	ह	ज	गऽ	शी	ऽ	त	ल
ग	म	(नि)ध	नि	धनि	सां	सां	-	सां	नि	सा	रें	नि	सां	ध	प
भ	र	ती	ऽ	सुऽ	ख	स	ऽ	प	ति	ज	न	आँ	ऽ	च	ल
सा	प	प	-	प	ध	म	प	गम	गम	-	-	सा	(म)ग	(प)म	प
ज	ग	की	ऽ	हो	ऽ	तु	म	प्राऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन
सा	प	प	-	प	ध	म	प	गम	गम	-					
ज	न	की	ऽ	हो	ऽ	तु	म	प्राऽ	ऽऽ	ऽन ओ मैया मंगल… ।					

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाइये)

देवी जी का गीत

(ताल दादरा)

महिमा तुम्हारी क्या तीन लोक न्यारी ।
दासी की टेर सुनो जय अम्ब प्यारी ॥
आई लिये मन में आशा, कितनी अभिलाष पास ।
हा न जाऊँ मैं निराश, विनय है हमारी ॥
मइया मे हमरी बेर, अँखियाँ क्यों ली हैं फेर ।
छोड़ न अपनी टेर प्रेम की भिखारी ॥
हूँ मैं कितनी अधीर, कैसे अब सहूँ पीर ।
अँखियों से बहे नीर, आई मैं दुखारी ॥
दानी हो वरदानी हो अन्नपूर्णा रानी हो ।
शिव की पटरानी हो चरणन बलिहारी ॥

×						×			•		
		म									
नि	सा	ग	-	म	-	गम	पधु	धु	प	म	प
म	हि	मा	ऽ	तु	ऽ	म्हाऽ	ऽऽ	री	क	मा	ऽ
ग	-	सा	सग	मप	म	रे	-	सानि	सा	-	-
ती	ऽ	न	लोऽ	ऽऽ	क	न्या	ऽ	ऽऽ	री	ऽ	ऽ
		म									
नि	सा	ग	-	म	-	गम	पधु	धु	प	म	प
दा	ऽ	सी	ऽ	की	ऽ	टेऽ	ऽऽ	र	सु	ना	ऽ
ग	-	सा	सग	मप	म	रे	-	सानि	सा	-	-
जय	ऽ	ऽ	अंऽ	ऽऽ	ब	प्या	ऽ	ऽऽ	री	ऽ	ऽ
				नि							
ग	-	म	म	धु	नि	धुनि	सारें	सानि	सां	-	-
आ	ऽ	ई	लि	ये	ऽ	मनऽ	ऽऽ	मेंऽ	आ	ऽ	ऽश
नि	नि	नि	-	सां	सां	निसां	रें	निसां	धु	प	-
कि	त	नी	ऽ	अ	भि	लाऽ	ऽ	षऽ	पा	ऽ	ऽस

बधाया

(ताल कहरवा)

आज भवन गुलजार है गाओ बधाई ॥
आओ मंगल दीप जलाओ,
सुन्दर साज भवन में सजाओ।
मन में उमंगें अपार है गाओ बधाई ॥
कामिनी छम छम अँगना फिरती,
शब्द सुहाने मीठे हैं करती।
सज सोलह शृङ्गार है गाओ बधाई ॥
शोभा निराली कही न जाये
आई सुहागिन अँगना बधाये।
गोटों के गूँथे हार है गाओ बधाई ॥
सुशिया ने कर दी है उजाली,
चम-चम चमके मानो दिवाली।
आई है कैसी बहार है गाओ बधाई ॥

×	×	× (ग)	×
सागग ग ग	ग रे ग प	गम गम रे रेग	सारे रेग सानि् सा
आऽ ज भ	व न गु ल	जाऽ ऽऽ र हैऽ	गाऽ ओ ब धाऽ ई
–			
ऽ			
ग गप प	पध नि धनि रेंसां	– सांनि निध धप	मं मंध ध –
आ ऽऽ आ	मंऽ ऽ गऽ लऽ	ऽ दीऽ पऽ जऽ	ला ऽऽ ओ ऽ
– ग गप प	पध नि धनि रेंसां	– निसां निध धप	मं मंध प –
ऽ सु न्दऽ र	साऽ ऽ जऽ भऽ	ऽ वन मेंऽ सऽ	जा ऽऽ ओ ऽ
– सागग ग ग	ग रे ग प	गम (ग) गम रे रेग	सारे रेग सानि् सा
ऽ मन म उ	मं ऽ ग अ	पाऽ ऽऽ र हैऽ	गाऽ ओ ब धाऽ ई
–			
ऽ	आज भवन गुलजार		

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाइये)

बधाया

(ताल कहरवा)

मिल गाती बधाये सुहागिन है नार ।
सखी आया है सुखमय निराला त्योहार ।।
देखो ये मौसम प्यारा सुहाना
होठों ने गाया मधुर सा तराना ।
उमंगों की बीणा में साजे हैं तार ।।
आशा की कलियाँ खिली मतवाली
हाथों की मेहंदी बिखेरे है लाली ।
आज अँगना हमारे मनाओ बहार ।।
मानो लहरिया आज खिला ही जाये
खुशियों की दुनिया बहारें है लाये ।
नयनों में छाया गुलाबी खुमार ।।
सावन हरियाला सभी का सुहाये
कजली घटा आज मन को लुभाये ।
डाली डाली पे सुन्दर निखार ।।

×	×	×	×
मा रे	नि -सा नि रेमा	नि -प प पध	मप -नि - नि
मि ल	गा ऽती ऽ बऽ	धा ऽये ऽ सुऽ	हाऽ ऽगिन ऽ है
मा - मा रे	नि -सा नि रेमा	नि -प प पध	मप -नि - नि
ना ऽर स खी	आ ऽया ऽ हैऽ	सुख ऽमय ऽ निऽ	राऽ ऽला ऽ त्यो
मा -			
हा ऽर			
- -	मिमा -रे - रे	रे - मा रे	ग ग - म
• •	देऽ ऽखो ऽ ये	मौ ऽ स म	प्या ऽरा ऽ सु
रे - मानि मा	प -प - धप	मग -म - ग	रेग -म - म
हा ऽ नाऽ ऽ	हो ऽठों ऽ नेऽ	गाऽ ऽया ऽ म	धुर ऽसा ऽ त
गमग -रे मानि मा		म	गमग -रे मा मा
राऽऽ ऽऽ नाऽ ऽ	होठों ने गाया मधुर सा	त	राऽऽ ऽऽ ना उ
नि -सा नि रेमा	नि -प प पप	मप -नि - नि	सा -
मं ऽगों ऽ कीऽ	बी ऽणा ऽ मेऽ	साऽ ऽजे ऽ हैं	ता ऽर मिल गाती

(शेष अन्तरे इन्हीं स्वरों पर गायें)

बधाया

(ताल कहरवा)

बधिया सुहानी मुबारक हो प्यारी।
लाई बधाई यह ननदी तुम्हारी॥
आज सभी मिल मंगल गायें।
भाभी के नयनों में लो-लो जायें॥
फूले हमेशा प्रीति की क्यारी॥
सुन्दर मस्तानी भाभी रंगीली।
बाबुल के अँगना की शोभा छबीली॥
भाभी के आँचल म सुखिया हमारी॥
सासु के बैना ससुर के मैना।
प्रियतम की अपनी दुलारी सुनैना॥
लाई है ननदों के बीच बजारी॥
जाऊँगी लेके मुरली मन म मारी।
भाभी के प्रेम सहाई है भारी॥
रहे अमर यह बाबुल फुलवारी॥

×				×				×				×			
गुगु	-गु	-	गुरे	मारे	-मारे	म	मप	गु	-रे	मा	रे	मानि	धनि	मा	-
बधि	ऽया	ऽ	सुऽ	हाऽ	ऽनीऽ	ऽ	मुऽ	बाऽ	रक	ऽ	हो	प्याऽ	ऽऽ	री	ऽ
मगु	-गु	-	गुरे	मारे	-मारे	म	मप	गु	-रे	मा	रे	मानि	धनि	मा	-
बधि	ऽया	ऽ	मुऽ	हाऽ	ऽनीऽ	ऽ	मुऽ	बाऽ	रक	ऽ	हो	प्याऽ	ऽऽ	री	ऽ
मगु	-गु	-	गुरे	मारे	-मारे	म	मप	गुगु	-रे	मा	रे	मानि	धनि	मा	-
भाऽ	ऽई	ऽ	बऽ	धाऽ	ऽईऽ	ऽ	यऽ	नन	ऽदी	ऽ	तु	म्हाऽ	ऽऽ	री	ऽ
मा	-मा	-	म	गमधप	-पप	-	गम	-गम	धप	-प	गु	-रे	मानि	मा	
आऽ	ऽज	ऽ	स	भीऽऽऽ	ऽमिल	ऽ	मऽ	गाऽ	ऽऽऽ	ल	गा	ऽऽ	येंऽ	ऽ	
नि	-नि	-	नि	पधनि	-ध	प	पध	गम	ग	मध	प	गु	रे	मानि	मा
भा	ऽभो	ऽ	के	नैऽऽ	ऽनों	ऽ	मऽ	गाऽ	ऽऽ	गाऽ	ऽ	गा	ऽऽ	गेंऽ	ऽ

म

गु	-गु	-	गुरे	मारे	-मारे	म	मप	गु	रे	मा	रे	मानि	धनि	मा	-
फू	ऽले	ऽ	हऽ	मेऽ	ऽशाऽ	ऽ	प्रीऽ	ऽ	ति	की	ऽ	क्याऽ	ऽऽ	री	ऽ बधियां

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान हैं)

बन्नी

(ताल कहरवा)

डालो गले जयमाला सजन तेरे आली पियाहन आये।
आगे बढ़ो रानी डालो यह मन बन तेरे पियाहन आये ॥
धीरे चलो माला डालो सुमन की।
निरखि निरखि छवि मनमोहन की ॥
आरती मुख सजाये, चलो पिया आये।
लाज भरा डाला अवगुंठन।
प्रेम पाश में बांध प्रियतम मन ॥
दो दिल हैं एक हो जायें चलो पिया आये ॥
मुस्काई आज आशायें मनम।
कलियां बसन्त की इन नयन में ॥
काहे को आनन छिपाये चलो पिया आये।
नयना चार हो आज मिलेंगे।
'मधुर मिलन' के कमल खिलेंगे ॥
प्रीति सरोवर नहाय चलो पिया आये ॥

×	×	×	×
निसा -सा प प	प -नि धप म	मप -प - ग (म)	सा रे ग प
डाऽ ऽला ऽ ग	ले ऽऽ जऽ य	माऽ ऽला ऽ स	ज न ते रे
गुम,ग -रे मा मा	मा रे ग प	गुम ग -रे सा -	निसा -सा प प
आऽऽ ऽली ऽ पि	या ऽ ह न	आऽऽ ऽऽ ये ऽ	आऽ ऽगे ऽ ब
प -नि धप म	मप -प (म) - ग	मा रे ग प	गुम,ग -रे सा मा
ढ़ो ऽऽ राऽ नी	डाऽ ऽला ऽ यह	म न ब न	तेऽऽ ऽरे ऽ पि
मा रे ग प	गुम,ग -रे मा -		
या ऽ ह न	आऽऽ ऽऽ ये ऽ		
गम -प (नि) - नि	सां -सां - सां	सानि -सां - रें	नि सां ध प
धीऽ ऽरे ऽ च	लो ऽमा ऽ ला	डाऽ ऽलो ऽ सु	म न की ऽ

बन्नी

(ताल कहरवा)

आज सखी घर साजन आये।
थी तुम जिनको हृदय में बसाये॥
हृदय का सुन्दर सा सपना।
पहन उमंगों का है गहना॥
सो ही मीत तुम्हारे आये॥
चुन चुन प्रेम प्रसून हैं प्यार।
गूँथ हृदय का हार सँवारे॥
नाच नाच पहनाना आज॥
बना पिया की प्रेम पुजारी।
बसा उन्हें जीवन की डोरी॥
प्यार प्रीति का अमरत जगाये॥
आई घड़ी ये है मन भावन।
बाजे मधुर मिलन सुहावन॥
सुन के सुन्दर भाग सजाये॥

×				×				×				×			
नि	सा	म	ग	प	मं	ध	प	ग	म	रे	सा	नि़	रे	सा	-
आ	ऽ	ज	स	खी	ऽ	घ	रे	सा	ऽ	ज	न	आ	ऽ	ये	ऽ
नि़	सा	म	ग	प	मं	ध	प	ग	म	रे	सा	नि़	रे	सा	ऽ
थी	ऽ	तु	म	जि	न	को	हृ	दय	ऽ	म	ब	सा	ऽ	ये	ऽ
प	सा	सा	निध	ध	नि	सा	रें	नि	सा	ध	प	मं	प	प	-
हृ	ऽ	दया	ऽऽ	का	ऽ	सु	ऽ	न्द	र	सा	ऽ	स	प	ना	ऽ
प	सा	सा	निध	ध	नि	सा	रें	नि	सा	ध	प	मं	ग	प	-
प	ह	न	उऽ	मं	ऽ	गों	ऽ	का	ऽ	है	ऽ	गं	ग	ना	ऽ
नि	सा	ध	प	मंग	मंध	प	प	ग	म	रे	सा	नि़	रे	सा	-
सो	ऽ	ही	ऽ	मीऽ	ऽऽ	त	तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ

आज सखी घेरे

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गायें)

बन्नी

(ताल कहरवा)

गोरी तेरे देखो पिया मन भाने आये ।
जीवन की 'सहचरि' तुमको अपनी बनाने आये ॥
तेरी 'परमात्मा' को तो आज पहनने, सारथि' जीवन के तेरे हैं बनने ।
प्यार प्रीति की ये गांठ लगाने आये ॥
पहन सभी परिधान सजीले, मन में लिये था स्वप्न रँगीले ।
भर के अनुराग रंग सिन्दूर लगाने आये ॥
बनने चली 'वनिता' तुम उनकी कब से प्रतीक्षा में थी जिनकी ।
मन के पुजारी वो तो तेरे दीवाने आये ॥
अब तक तो थे वो अनजान, आज बने तेरे पहचाने ।
सूनी नगरिया मन की अपनी बसाने आये ॥
जीवन की आई तेरी सुन्दर शुभ वेला आई
आली भविष्य को तेरे उज्ज्वल बनाती आई ।
फूला फला तुम दिन यह सुहाने आये ॥

×	×	×	×	
सा गु म	प पनि धप म	मधु पम गु गुरे	गुम मगु रेसा सा	
गो री ते	रे SS देS खो	पिS SS या मन	भाS नेS आS ये	
– सागु रे नि (सा)	निसा सानि सारे गुम	म गुम गुरे रेसा	सारे मगु रेसा सा	–
S जीS वन की	सह चर तुम कोS	S अप नीS बS	नाS नेS आS ये	S
गुम धु नि	धुनि,सा सा सां सा	– नि नि सा	निसा रें निसा धु प	
तेS री पर	माSS त्मा को तो	S आ ज प	हSS नS ने S	
– गुम धु नि	धु सा सा सा	– नि नि सा	निसा रें निसा धु प	
S साS र थि	जी S वन के	S ते रे हैं	बSS नS ने S	
साप साप प	पधु सा धु पम	धु प गु रे	गुम मगु रेसा सा	
S प्याS रS प्री	SS ति की येS	गां S ठ ल	गाS नS आS ये	
– सा गु म	प – प पमा	प		
S गो री ते	रे S दे खोS	S गोरी तेरे देखो	पिया मन…… …	

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

बन्नी

(ताल कहरवा)

गोरी चलो पी के द्वार री सुन्दर अलबेली ॥
चाँद सा रूप चली लेकर तुम माथ लगा सौभाग्य का कुम-कुम ।
नयनन मे ले संसार री सुन्दर अलबेली ॥
भाग उमंगें हैं लहराईं लेके यह सुरियाँ अनेकों आईं ।
बाजे हैं मन के तार री सुन्दर अलबेली ॥
कब से मिलन की आशा सँजोई प्रेम देख है छिप छिप जाई ।
सपने हों तेरे साकार री सुन्दर अलबेली ॥
फूल बनी आशा की कलियाँ, आईं सुहानी मधुभरी घड़ियाँ ।
रोज बसन्त बहार री सुन्दर अलबेली ॥
दिन सोने के, चाँदी सी पर्व देखो जीवन में सुन्दर प्रभातें ।
बसे सुखद है बधार री सुन्दर अलबेली ॥

×	×	×	×
म गु गु गुरे	सा रे ग म	म गु -गु गु गुरे	सासा रेंरे सानि मा
गो री चS	ली S पी के	द्वा Sर री सुS	न्दर अल बेS ली
निमा SS			
निसा ग म	ध - प प	ग म गमपध प	गु गुरे सानि सा
चाS द सा	रू S प च	ली S लेSSS S	क रS तुS म
- नि नि नि	पध -नि प -	गम गम मध प	गु -रे सानि सा
S मा थ ल	गाS SS सौ S	भाS SS ग्यS का	कुम SS कुS म
म - गु गु गुरे	सा रे ग म	म गु -गु गु गुरे	सासा रेंरे सानि सा
S नय नों मS	ले S सं S	सा Sर री सुS	न्दर अल बेS ली
- S	गोरी चली पी के द्वार ------		

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान चलेंगे)

बन्नी

(ताल कहरवा)

आज चली गोरी पी की नगरिया।
छोड़ के बाबुल के महल अटरिया ॥
चमके हमेशा तेरे माथे का टीका, सब दिन रहे तेरे मौसम सुखी का।
हँस-हँस के बीते तेरी सारी उमरिया ॥
जीवन का तेरे हुआ है सबेरा, करन चली किसी दिल में बसेरा।
आली तुम्हारे आये बाँके साँवरिया ॥
जीवन में पतझड़ ना कभी आये प्रेम की ज्योति सदा जगमगाये।
मन की उमंगों का आये लहरिया ॥
अमर सुहाग रहे सुकुमारी बनो पिया की अपने दुलारी।
सुख की सदा ही बरसे बदरिया ॥
संग सहेली सुहाय चली हो, बाबुल मैया को रुलाये चली हो।
नयनों की छलकी जाय गगरिया ॥

×				×				×				×			
	सारे	ध	नि	सा	रे	सानि	सा	साग	रेग	गम	मप	ग	गरे	सानि	सा
	आऽ	ज	च	लो	ऽ	गोऽ	री	पीऽ	ऽऽ	कीऽ	नऽ	ग	रिऽ	याऽ	ऽ
-	सारे	ध	नि	सा	रे	सानि	सा	साग	रेग	गम	मप	ग	गरे	सानि	सा
ऽ	छोऽ	ड़	के	बा	ऽ	बुल	के	मऽ	हऽ	लऽ	अऽ	ट	रिऽ	याऽ	ऽ
-															
ऽ															
	मप	ग	म	प	प	प	प	-	नि	सां	सांरें	नि	सांनि	ध	प
	चम	के	ह	मे	शा	ते	रे	ऽ	मा	थे	काऽ	टी	ऽ	का	ऽ
-	मप	ग	म	प	नि	ध	प	-	नि	सां	सांरें	नि	-	ध	प
ऽ	चम	के	ह	मे	शा	ते	रे	ऽ	मा	थे	काऽ	टी	ऽ	का	ऽ
-	मप	ग	म	गमपध	नि (सा)	ध	प	-	नि	सां	सांरें	नि	-	ध	प
ऽ	सब	दिन	र	हेऽऽऽ	ऽ	ते	रे	ऽ	मौ	सम	सु	खी	ऽ	का	ऽ
-	नि	नि	नि	ध	पनि	ध	प	गम	गम	म	गग	ग	गरे	सानि	सा
ऽ	हँस	हँस	के	बी	तेऽ	ते	री	सा	ऽ	उ	म	रि	याऽ	ऽ	ऽ
-															
ऽ	आज चली गोरी														

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान करें)

बन्नी

(ताल कहरवा)

झम-झम करती आज सजन के तुम आओगी।
पी से हिलमिल भूल सभी को तुम जाओगी ॥
आई मिलन घड़िया मतवाली, प्यार प्रीति की जागी दिवाली।
नवजीवन के स्वप्न सँजोये आज लिवाओगी ॥
नयनों में है लाज के डोरे, मन में रहा है प्रेम झकोरे।
पिया प्रेम की एक अनोखी ज्योति जगाओगी ॥
जीवन की बगिया में आओ, सदा खिले तेरा या मालो।
लेकर चिर अनुराग हृदय की भेंट चढ़ाओगी ॥
मगन नयन कहती हैं सखियाँ नहीं भूलना बाबुल गलियाँ।
किसी न्यारी सी घर की तुम नयन ओट हो जाओगी ॥

×								×				०			
सा	प	प	म	प	ऩि	ध	प	मग	म	–	प	प	म	ग॒	–
झ	म	झ	म	क	र	ती	ऽ	आऽ	ऽ	ऽज	स	ज	न	के	ऽ
सा	–	रे	–	(सा) ऩि	–	सा	–	मा	प	प	म	प	ऩि	ध	प
तुम	ऽ	आ	ऽ	ओ	ऽ	गी	ऽ	पी	ऽ	से	ऽ	हि	ल	मि	ल
मग	म	–	प	प	म	ग॒	–	सा	–	रे	–	(धा) ऩि	–	सा	–
भूऽ	ऽ	ऽल	स	भी	ऽ	को	ऽ	तुम	ऽ	जा	ऽ	ओ	ऽ	गी	ऽ
(म) सा	–	रे	रे	रे	म	म	म	प	म	प	ऩि	ध	प	प	–
आ	ऽ	ई	मि	ल	न	घ	ड़ि	या	ऽ	म	त	वा	ऽ	ली	ऽ
म	प	नि	नि	–	सां	नि	सां	निसांरेंमं	ग॒	रें	मं	र	नि	सा	–
प्या	ऽ	र	प्री	ऽ	ति	की	ऽ	जाऽऽऽ	ऽ	गी	दि	वा	ऽ	ली	ऽ
प	मां	सा	–	सा	मा	मां	रें	ऩि	ऩि	ऩि	सां	ध	प	प	–
न	व	जी	ऽ	व	न	के	ऽ	स	प	न	सँ	जो	ऽ	ये	ऽ
प	ऩि	ऩि	ऩि	ध	–	म	प	ग	म	–	प	ग	म	रे	ग॒
आ	ऽ	ज	लि	वा	ऽ	ओ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

झम-झम करती आज— — —। (शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

बन्नी

(ताल कहरवा)

सब सखियाँ बलिहारी, बनी अति प्यारी बड़ी सुकुमारी !
आज खुशी की आई हैं घड़ियाँ साथ सुहाग भरी हर चिड़िया ।
चमके भाल तुम्हारी बनी अति प्यारी, बड़ी सुकुमारी ॥
बनी का कमल समान भी बाकी, नयनन कजरा डार भरा जी ।
सुन्दर राजकुमारी बनी अति प्यारी बड़ी सुकुमारी ॥
आशा के फूलों से आंचल भरा है, मन की गिरा आज उपवन हरा है ।
जागी उमंगें तुम्हारी, बनी अति प्यारी बड़ी सुकुमारी ॥
करनी रहो मन दिन रँगरसिया गूँथ सदा सौभाग्य की लड़ियाँ ।
रसिया की बनके दुलारी बनी अति प्यारी, बड़ी सुकुमारी ॥
जबसे पिया के हो तुम मनकी छोड़ सभी अपनी हमजोली ।
तोड़ के प्रीति हमारी, बनी अति प्यारी, बड़ी सुकुमारी ॥

×				×				×				×			
मा	माप	प	प	प	–नि	ध	पम	मप	–म	प	मग	मा	रे	ग	पम
स	बऽ	स	खि	यां	ऽऽ	ब	लिऽ	हाऽ	ऽरी	ऽ	बऽ	नी	ऽ	अ	तिऽ
गम,ग	–रे	मा	सा	मा	रे	ग	प	गम	गरे	मा	–				
प्याऽऽ	ऽरी	ऽ	ब	ड़ी	ऽ	सु	कु	माऽ	ऽऽ	री	ऽ				
	नि														
गम	–ध	–	नि	धनिसां	–	सां	–	नि	–सां	–	रें	नि	सां	ध	प
आऽ	ज	ऽ	खु	शीऽऽ	ऽ	की	ऽ	आ	ईं	ऽ	हैं	घ	ड़ि	यां	ऽ
	नि														
गम	–ध	–	नि	धनि,सां	–सां	–	सां	सां	नि	सां	रें	नि	सां	ध	मप
साऽ	थऽ	ऽ	सु	हाऽऽ	गऽ	ऽ	भ	री	ऽ	ह	र	चि	ड़ि	या	ऽऽ
मा	प	प	–	प	नि	ध	पम	मग	–म	प	मग	सा	रे	ग	पम
च	म	के	ऽ	भा	ऽ	ल	तुऽ	म्हाऽ	ऽरी	ऽ	बऽ	नी	ऽ	अ	तिऽ
गम,ग	–रे	मा	मा	सा	रे	ग	प	गम	गरे	मा	–				
प्याऽऽ	ऽरी	ऽ	ब	ड़ी	ऽ	सु	कु	माऽ	ऽऽ	री	ऽ	सब सखियां—			—।

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

बन्नी

(ताल कहरवा)

गोरी ऐसी छिपे जैसे है चांदनी ।
दुलहिन के वेष में, पिया के देश में ।
बन ठन चली आज है कामिनी ॥
लटें घुंघराली, बड़ी मतवाली ।
होठों पे खेल रही रागिनी ॥
अनुपम शृंगार किये मन में अंगार लिये ।
मानों गगन में चमके दामिनी ॥
सुन्दर सजीली वो आई रंगीली ।
पिया मिलन की मधुर यामिनी ॥
फूले फले कोमल सी कली पे ।
गाती है मंगल सुहागिनी ॥

●———●

×				×				×				×			
		सा	नि	सा	–रे	–	रे	रे	–ग	रे	ग	म	–प	प	म
		गो	री	ऐ	ऽसी	ऽ	छि	पे	ऽजै	ऽ	से	है	ऽचां	ऽ	द
रेग	–रे	सा	नि	सा	–रे	–	रे	रे	–	–	–				
नीऽ	ऽऽ	गो	री	ऐ	ऽसी	ऽ	छि	पे	ऽ	ऽ	ऽ				
मप	–ग	–	म	प	–प	प	–	नि	–सां	नि	सांरें	ध	–प	प	–
दुल	ऽहन	ऽ	के	वे	ऽष	में	ऽ	पि	ऽया	ऽ	केऽ	दे	ऽश	में	ऽ
नि	–सां	नि	सांरें	ध	–प	प	प	मप	–म	मप	मग	रेग	–रे		
बन	ऽठन	ऽ	चऽ	ली	ऽआ	ऽ	ज	हैऽ	ऽका	ऽऽ	मिऽ	नीऽ	ऽऽ गोरी ऐसी ।		

(शेष अन्तरे इसी अन्तरे के समान गाइये)

———

बन्नी

(ताल कहरवा)

बन्नी आज मेरी नादान बन्नी थी सबकी जीवन प्रान।
पति की सेवा निशदिन करना बनके सुशिक्षित नारी।
चरण धूल से उनकी प्रति दिन रहना आज्ञाकारी ॥
पति तेरा है भगवान बन्नी थी सबकी जीवन प्रान।
थक कर घर में जब आयेंगे जब भी शाम सवेरे ॥
स्वागत का तुम आगे बढ़ना प्रिय मुस्कान बिखेर।
करना उनका सम्मान, बन्नी थी सबकी जीवन प्रान ।
'सत्यधर्म' कुल की मर्यादा जीवन ध्येय तुम्हारा।
'मधुर भाषिणी क्षमाशीला' हो कर्तव्य तुम्हारा ॥
स्वभावा रत्न महान बन्नी थी सबकी जीवन प्रान ॥
पतिव्रते शुचि सदाचारिणी रहो सदा जीवन में।
सुख की घड़ियां सदा हो रहा करने तुम आंगन में ॥
बन सकल गुणों की खान, बन्नी थी सबकी जीवन प्रान।
सुख म कायम दुख म आंसू नयनों में यूँ रहना ॥
सदा सुहागन रहोगी बेटी ! जीवन का सुख सहना।
प्रभु करें तेरा कल्याण बन्नी थी सबकी जीवन प्रान ॥

—★—

x								×							
						ग	रे	ग	प	प	प	मंप	धप	मंग	ग
						ब	न्नी	आ	ऽ	ज	मे	रीऽ	ऽऽ	नाऽ	ऽ
–	ग	रे	ग	सा रे	सा	सा	नि	सा	ग	गमंग	सा	ग	–	मंप	गमं
•	दा	ऽन	ब	न्नी	ऽ	थी	ऽ	स	ब	कीऽऽ	ऽ	जी	ऽ	वऽ	नऽ
प	–	–	–	म मं	ग										
प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन	बन्नी आज मेरी नादान बन्नी थी सबकी जीवन—									
प	–	–	–	–	–	–	–	–							
प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन	•							
									साग	ग	ग	ग	–	गम,ग	रे
									पऽ	ति	की	से	ऽ	वाऽऽ	ऽ

–	रेग	रे	र	निमा	गरे	मानि	नि	प	प	नि	नि	मा	–	रे	ग
*	निश	दि	न	कऽ	रऽ	नाऽ	ऽ	म	न	के	सु	शी	ऽ	ला	ऽ
रे⌒															
ग	सा	सा	–	–	–	गरे	मारे	ग							
ना	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ पति की सेवा निश दिन करना मनके सुशीला							
रे⌒															
ग	सा	मा	–	–	–	–	–	सा	ग	ग	ग	प	प	प	मं
ना	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	च	र	या	धू	ऽ	ल	ले	ऽ
मं	ध	ध	प	पनि	धप	प	–	–	मंध	–ग	–	मंप	मं	ग	रे
र	न	की	ऽ	मऽ	तिऽ	दिन	ऽ	*	रह	ऽना	ऽ	भाऽ	ऽ	ला	ऽ
ग	प	प	–	–	–	ग	रे	ग	प	प	–	मंप	धप	मंग	ग
का	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	प	ति	हे	ऽ	रा	ऽ	हैऽ	ऽऽ	मऽ	ग
				सा											
–	ग	र	ग	रे	सा	सा	नि	सा	ग	गमंग	सा	ग	–	मंप	गम
*	मा	ऽन	च	लो	ऽ	मी	ऽ	स	च	कीऽऽ	ऽ	भी	ऽ	मऽ	नऽ
				म											
प	–	–	–	मं	ग										
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पत्नी भाग मेरी माधान ~									

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गावें)

बन्नी

(ताल कहरवा)

परम्परा कुल की मर्यादा जाये निभाना बेटी ।
कुल दोनों की रख मर्यादा लाज बचाना बेटी ॥
तुम सास स्वसुर घर जाना मत राखो इसमें बाधा ।
है बचपन का संसार भुलाय जाना बेटी ॥
निज स्वाम तनय जेठानी, से बोलेगी मधुरी वानी ।
है सबका प्यार दुलार तुम पाय जाना बेटी ॥
तुम करो पति की सेवा नहिं पूजा दूजा देवा ।
कर अपने पति का प्यार रिझाये जाना बेटी ॥
"गौरव" या चाहा अपना कर्तव्य सच्चा करना ।
है गृहिणी के श्रृंगार सजाये जाना बेटी ॥
सर्वत्र गुण से आदर पाओगी घर और बाहर ।
'यश' का टीका है लिलार लगाय जाना बेटी ॥

×				×				×				×			
सा	रे	म	गु	रेगु	रेसा	प	नि	सा	–	सा	सा	नि	रे	सा	–
प	रम्	ऽ	प	राऽ	ऽऽ	कु	ल	की	ऽ	म	रि	या	ऽ	दा	ऽ
सा	ग	ग	ग	ग	म	प	धप	म	ग	म	–	रे	गु	मा	र
जा	ऽ	ये	नि	भा	ऽ	ना	ऽऽ	बे	ऽ	टी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	रेगु	मप	म	रेगु	रेसा	प	प	नि	–	सा	सा	नि	रे	मा	–
प	रम्	ऽऽ	प	राऽ	ऽऽ	कु	ल	की	ऽ	म	रि	या	ऽ	दा	ऽ
जाये निभाना बेटी															
सा	रे	म	गु	रेगु	रेसा	प	नि	सा	सा	सा	सा	नि	रे	सा	ऽ
कु	ल	दो	ऽ	नोंऽ	ऽऽ	की	ऽ	र	ख	म	रि	या	ऽ	दा	ऽ
सा	ग	ग	ग	ग	म	प	धप	म	ग	म	–	रे	गु	सा	रे
ला	ऽ	ज	ब	चा	ऽ	ना	ऽऽ	बे	ऽ	टी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

रे	रेगु	मप	म	रेगु	रेमा	प़	ध़	नि़	–	सा	सा	नि़	रे	सा	–
प	रम्ऽ	ऽऽ	प	राऽ	ऽऽ	कु	ल	की	ऽ	म	रि	या	ऽ	दा	ऽ
–	–														
ऽ	ऽ														
		ग	म	म	प	प	प	प	धप	ग	म	गमपध	नि़	ध	–
		तु	म	मा	ऽ	न	स	मु	रऽ	ध	र	बाऽऽऽ	ऽ	मो	ऽ
–	–	प	प	प	नि	नि	–	नि	सां	रें	गंरें	सांनि	धनि	सां	–
ऽ	ऽ	म	द	रो	ऽ	मो	ऽ	द	म	ऽ	रुऽ	बाऽ	ऽऽ	मो	ऽ
–	–	प	–	प	सा	सा	रें	सा नि़	–	नि़	सांनि़	ध	–	–	नि़
ऽ	ऽ	है	ऽ	ब	च	प	न	का	ऽ	मे	ऽऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽर
ध	प	प	ध	ग	–	ग	–	ग	म	प	धप	मग	–	म	–
मे	ऽ	भु	ऽ	बा	ऽ	ये	ऽ	भा	ऽ	ना	ऽऽ	बेऽ	ऽ	टी	ऽ
रे	गु	सा	रे	रे	रेगु	मप	म	रेगु	रेसा	प	ध़	नि़	–	सा	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	रम्ऽ	ऽऽ	प	राऽ	ऽऽ	कु	ल	की	ऽ	म	रि
नि़	रे	मा	–												
या	ऽ	दा	ऽ	जाय निमाना बेटी											

(शेष अन्तरे इन्हीं स्वरों पर बजेंगे)

ध	सां	-	धसांरेंगं	-	रें	-	नि	सां	-	नि	-	ध (प)	-
के	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	प	ऽ	थ	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ
म	ध	-	प	-	ध	-	ध	-	-	नि	-	ध	-
जा	ऽ	ऽ	भा	ऽ	गी	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	बि	ऽ
नि	ध	-	नि	प	प	-	ध	प	-	पध	सां	सा	रें
द	ऽ	ऽ	ऽ	आ	च	ऽ	की	ऽ	ऽ	पऽ	ऽ	रि	ऽ
नि	-	-	ध	-	म	-	प	ध	-	म	-	ग (रे)	-
यी	ऽ	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ	ब	न	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ

चली बेगाने घरा ---

(शेष अन्तरे भी इन्हीं स्वरों पर गाइये)

बन्नी

(ताल कहरवा)

करे आज श्रृंगार गोरी मन के संवर।
आज सबको रुला के चली पी के नगर॥

नयनों म सुरिया के दीप जला के।
मन म उमंगों की दुनिया सजा के॥
दुनिया सजा के, पिया आये हैं द्वार लिये प्रेम चुनर।
तुझे लेके चले री वो अपनी डगर॥

मंत्रा के बंधन से डोर बंधेंगे।
झुक समपण मे नयना करेंगे॥
नयना करेंगे दुई आज नजर चार मिले तुमको सँवर।
तुझे लेके चले री वो अपनी डगर॥

प्रेम क मंत्र को चुपके स कहके।
मन की खिली तेरे कलिया महके॥
कलियां महके आई आज बहार खिले तेरे अधर।
तुझे लेके चले री वो अपनी डगर॥

मईया और बाबुल के प्राणों से प्यारी।
सखियों की अपने बड़ी थी दुलारी॥
थी तुम दुलारी चली है सुकुमार सजाके नयना गगर।
तुझे लेके चले री वो अपनी डगर॥

———•———

×	×	×	×
सि सा	सागु –रे नि सा	सागु –रे नि सा	सागु सासा गुमा रेसा
क रे	आऽ ऽऽ श्र र्ंं	गाऽ ऽर गो री	मनऽ ऽके ऽऽ संऽ
नि – प धप	मपम –गु – सा	रे रे गुम पम	गुम गुरे सा सा
वर ऽ आ ऽज	सबऽऽ ऽको ऽ रु	ला के चऽ लीऽ	पीऽ ऽके ऽ न
सा –			
गर ऽ			
– –	सा –सा प ध	पप –धु – प	म –म प म
ऽ ऽ	नै ऽनों ऽ म	सुरि ऽयों ऽ के	दी ऽप ऽ ज

ग	म	गम	प	ग	-ग	-	ग	ग	-म	ग	म	रेम	-रेम	पमु -	प
ना	ऽ	कऽ	ऽ	मन	ऽम	ऽ	प	मे	ऽगों	ऽ	की	धुनि	ऽभोऽ	ऽऽऽ	म
गु	-रे	मा	-	पम	-म	-	मप	गु	रे	नि	मा	सागु	रे	नि	सा
ना	ऽऽ	क	ऽ	धुनि	ऽमों	ऽ	मऽ	जा	के	पि	या	प्याऽ	ऽऽ	ए	है
मागु	-रे	नि	सा	सागु	सासा	गुमा	रेमा	नि	-	प	पप	मपम	-गु	-	सा
द्वार	ऽर	खि	च	मऽ	ऽम	ऽऽ	भुऽ	मर	ऽ	तु	मेऽ	वेऽऽ	ऽक	ऽ	च
रे	रे	गुम	पम	गु	-रे	सा	मा	सा	-						
न	री	पाऽ	ऽऽ	मन	ऽमी	ऽ	क	गर	ऽ						

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान हैं)

बन्नी

(ताल कहरवा)

चौदह वर्षों तू करके बसेरा चली दुल्हन के वेष ।
बाबुल के घर खेल कूद अबकी तुम डेरा पराये ।
उड़ती पंछी की भाँति आज ममता की डोर तुड़ाये ॥
रचा विधि ने खेल ये ऐसा जाओ पिया के देश ॥
सेवा करो गुरुजन की सेवा रहना आज्ञाकारी ।
श्रद्धा के प्रिय पुष्प चढ़ाकर बन गृह लक्ष्मी प्यारी ॥
सत्य धर्म की राख टेक तुम जाओ पिया के देश ॥
रख अनुरक्ति पति में लाओ पथ में फूल बिछाना ।
अपना हृदय में ज्योति प्रेम की आरति नित्य सजाना ॥
बन बसन्त जीवन उपवन का, जाओ पिया के देश ॥
वशीकरण का यही मन्त्र है, सीखो मेरी दुलारी ।
सच्चा भूषण यही तुम्हारा सो पहनो सुकुमारी ॥
बनोगी घर का ताज सभी के, जाओ पिया के देश ॥
अपने सद्‌गुण की आभा से, घर को स्वर्ग बनाओ ।
हो अखण्ड सौभाग्य तुम्हारा ले आशीष ये जाओ ॥
घर-घर गूँजे सुयश तुम्हारा जाओ पिया के देश ॥

×				×				×				×			
		सारे	निसा	सासा	म	-	मप	गम	पनि	धप	मग	गम	पम	गम	रेसा
		चौऽ	दहऽ	बर	षों	ऽ	तूऽ	कर	केब	सेऽ	राऽ	चली	दु	ल्हन	केऽ
मा	-														
वे	ऽष														
		-	-	निसा	मप	प	पप	प	पध	पम	मम	मप	पनि	निध	धध
		●	●	बाऽ	बुल	के	घर	खे	लकू	ऽद	अब	कीऽ	तुम	डेऽ	राप
प	-ध	म	-	गम	म	निध	धध	प	पध	पम	मम	मप	पनि	निध	धध
रा	ऽऽ	ये	ऽ	बाऽ	बुल	केऽ	घर	खे	लकू	ऽद	अब	कीऽ	तुम	डेऽ	राप

भात

(ताल कहरवा)

मेरे बाबुल ने भेजा सँवार, भात के बीरन को।
लाये क्या-क्या हो तुम सरकार बहिन के दर्शन को॥

मन हरषाये खुशी में फूला।
आई सभी दरबार भात के देखन को॥
महिमा भरी है प्यारा लगाये।
हो रही पेरा बयार चूनर के ओढ़न को॥
ओढ़ूँगी मैं तो चूनर जयपुर की।
गोटे लगी हो किनार बहिन के पहिनन को॥
सासुल सिर चीर ससुर को पाग।
बहनोई को सूट तैयार, भात के पहिनन को॥
दो हरषों का "मिलन सन्देशा"।
मामा चोखा को है दरकार भात के पहिनन को॥
प्रेम का टीका भाल लगाऊँ।
कवि गावे ये महिमा तुम्हार भात के सँगावन का॥

×								×				•			
						सा	नि	सा	ऽग	–	ग	ग	मं	प	ध
						मे	रे	बा	ऽबुल	ऽ	ने	भे	ऽ	जा	स
धमं	प	मंग	ग	ग	मं	प	ध	पमं	प	ग	रे	गुरे	गरे	सा	नि
वाऽ	ऽ	ऽऽ	र	भा	ऽ	त	के	बीऽ	ऽ	र	न	कोऽ	ऽऽ	ला	ये
सा	ऽग	–	ग	ग	मं	प	ध	पमं	प	मंग	ग	ग	मं	प	ध
क्या	ऽक्या	ऽ	हो	तु	म	स	र	काऽ	ऽ	ऽऽर	ब	हि	न	के	ऽ
धमं	प	ग	रे	गरे	गरे	सा	नि	सा	ऽग	–	ग	–	–	–	–
दऽ	र	श	न	कोऽ	ऽऽ	मे	रे	बा	ऽबुल	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	ध	धनि	सँसां	निध	नि	ध	–	ग	रे	ग	ध	रे	गरे	सा	–
म	न	हरऽ	ऽऽ	षाऽ	ऽ	ये	ऽ	खु	शी	ऽ	में	फू	ऽऽ	ला	ऽ

बरात का स्वागत गान

(ताल कहरवा)

आज छाया कैसा रंग अनोखे मनम उमंग, बैठ गाती है वनिता अनोखे स्वगान।
स्वागत है हमर उपवन म ऋतु सदृप आने वाला।
स्वागत है हम मयूर के घन सुख वर्षा करने वाला॥
सजाये खुशियों के साज, करें अगवानी हम आज, आये नगरी हमारी अनोखे मेहमान।
पुलकित अंग अंग हमारे तुमसे अतिथि जो आये द्वारे।
देख तुम्हारी बंधु सरलता, बन गये हम बिन मोल तुम्हारे॥
जगा के मिलन गुलाल, हम हुये हैं निहाल, आये नगरी हमारी अनोखे मेहमान॥
संचित थी मनम अभिलाषा तुमसे जुड़े अब नाता ये पावन।
ऐ 'स्नेही' धन्य बने हम, घड़ी आज की है बड़ी ही सुहावन॥
बँधा आ बंधुता का धागा पहन लो प्रेम की पाग, आये नगरी हमारी अनोखे मेहमान॥

×				×				×				×			
		सारे	रे	गु	गु	रे	गुरे	सा	-नि	सारे	रे	गु	गु	रे	गुरे
		आऽ	ज	छा	या	कै	साऽ	र	ऽग	बोऽ	खे	म	न	म	उऽ
मा	-नि	सारे	गु	मा	-सा	-	नि	मध	नि	प	ध	मा	सा	रे	रेम
म	ऽग	बैऽ	ठ	गा	ऽती	ऽ	है	वनि	ता	ऽ	अ	रा	खे	स	हऽ
म गु	-														
गा	ऽन														
		-	-	~	प	प	प	प	-	गुप	म	-	मप,म	-गु	रे
		•	•	•	स्वा	ग	त	है	ऽ	हमऽ	ऽ	ऽ	रेऽऽ	ऽउ	प
रेगु	-रे	गुप	म	~	म	गु	सा	नि	नि	निम	गुम	~	गुम	-गु	रे
वनऽ	ऽ	मऽ	ऽ	ऽ	ऋ	तु	म	द	प्य	आऽ	ऽऽ	ऽ	नेऽ	ऽवा	ऽ
गु	-	-	-	~	प	प	प	प	~	गुप	म	-	मप,म	-गु	-रे
वा	ऽ	•	•	•	स्वा	ग	त	है	ऽ	हम	ऽ	ऽ	मऽऽ	ऽयू	ऽर
रेगु	-रे	गुप	म	~	मम	-गु	मा	नि	~	निम	गुम	-	गुम	-गु	रे
केऽ	ऽऽ	घनऽ	ऽ	ऽ	सुख	ऽव	र	षा	ऽ	कर	ऽऽ	ऽ	नेऽ	ऽवा	ऽ

समधी स्वागत गान

(ताल रूपक)

आज मन सबके परम उल्लास छाया ॥
दीन सी कुटिया में समधी आज बन मेहमान आये,
भाग्य जागे हैं हमारे जो बढ़ाने मान आये।
जोहते थे बाट जिसकी भाग्य ने वह दिन दिखाया ॥
बन्धुता का भाव गूँथे माल हम यह सरस लाये
हैं नहीं फूले समाते आपका हम दरश पाये।
इस परस्पर प्रीति सम्मेलन से अति आनन्द छाया ॥
आपके आगमन से यह हो गया पावन सदन,
गूँज उठा मधु कलरवों से है हमारा यह भवन।
हर रहा मन है सभी का जो मृदुल सा हास छाया ॥

×					१		×					२	
सा	ग	ग	ग	रे	ग	प	मं	प	ग	ग	रे	गमं	प
आ	ऽ	ज	म	न	स	ब	के	ऽ	प	र	म	उऽऽ	ऽ
रे	ग	रे	नि़	रे	सा	–							
ला	ऽ	स	छा	ऽ	या	ऽ							
ग	–	ग	प	–	ध	प	पध	निसां	सां	नि	रें	सां	–
दी	ऽ	न	सी	ऽ	कु	टि	याऽ	ऽऽ	में	स	म	धी	ऽ
नि	–	नि	नि	नि	ध	नि	धनि	रेंसां	धां	ध	नि	प	ध
आ	ऽ	ज	ब	न	मे	ह	माऽ	ऽऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ
ग	रे	ग	प	–									
दी	ऽ	न	मो	ऽ	कुटिया म समधी आज बन मेहमान आये								
ग	रे	ग	प	–	ध	प	पध	निसां	सां	नि	रें	सां	नि
भा	ऽ	ग्य	जा	ऽ	गे	ऽ	हैंऽ	ऽऽ	ह	मा	ऽ	रे	ऽ

नि	–	नि	नि	–	ध	नि	धनि	रेंसां	सां	ध	नि
जा	ऽ	व	द्वा	ऽ	ने	ऽ	माऽ	ऽऽ	न	खा	ऽ
मं	–	मं	प	ध	ध	नि	प	–	मं	प	ध
जा	ऽ	इ	ठे	ऽ	ब	ऽ	बा	ऽ	ट	जि	म
प	–	मं	प	ध	ध	नि	प	–	मं	प	ध
को	ऽ	इ	ठे	ऽ	बै	ऽ	बा	ऽ	ट	जि	स
प	रे	रे	ग	रे	ग	प	रे	ग	र	नि	रे
मा	ऽ	म्म	ने	ऽ	ब	इ	दि	न	दि	खा	ऽ
सा	ग	ग	ग	रे	ग	प	रे	ग	रे	नि	रे
मा	ऽ	म्म	ने	ऽ	ब	इ	दि	न	दि	ग्वा	ऽ

आज मन सनक – ---- –

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तर के समान बजेंगे)

ज्यौनार

(ताल कहरवा)

आज आये हैं समधी जागे भाग ।
धन्य प्रभू जिन आय मिलायो गाठ प्रेम की गई है लाग ।
हम सब मिल आनंद मगन हैं, गावीं सभी मिल मंगल राग ॥
हम सों तो कुछ बन नहिं आई, फिर भी भक्ष्य को ले पराग ।
तंदुल जानों सुदामा के मे मानो विदुर को तुम यह साग ॥
बड़े प्रेम से करें उपस्थित भर हिय में अनन्य अनुराग ।
आज नहीं हम फूले समावे धान प्रेम को है यह भाग ॥

×				×				×				×			
		ग	–	सा	–ग	–	ग	ग	म	पध	मप	पनि	–नि	ध	पध
		आ	ऽज	आ	ऽये	‿	हैं	स	म	धीऽ	ऽऽ	जाऽ	ऽगे	ऽ	हैंऽ
मप	म														
भाऽ	ऽग														
		–	–	म	–म	ध	ध	धनि	निध	निसां	सां	नि	–सां	–	रें
		•	•	ध	ऽन्य	ऽ	प्र	भूऽ	ऽऽ	जिऽ	न	आ	ऽय	ऽ	मि
नि	सां	धनि	पध	म	–म	ध	ध	धनि	निध	निसां	सां	नि	–सां	–	रें
ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	ध	ऽन्य	ऽ	प्र	भूऽ	ऽऽ	जिऽ	न	आ	ऽय	ऽ	मि
नि	सां	ध	–	नि	–नि	–	नि	–	सां	नि	सां	ध	प	पध	निसां
ला	ऽ	यो	ऽ	गां	ऽठ	ऽ	प्रे	ऽ	म	की	ऽ	गई	ऽ	हैऽ	ऽऽ
पध	धप	म	ग	सा	–ग	–	ग	ग	म	पध	मप	पनि	–नि	ध	पध
आऽ	ऽग	आ	ऽ	आ	ऽये	ऽ	हैं	स	म	धीऽ	ऽऽ	जाऽ	ऽगे	ऽ	हैंऽ
मप	प														
भाऽ	ऽग														

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान चलेंगे)

ज्यौनार

(ताल कहरवा)

आज कैसा समय है सुहाना समय है सुहाना हो समधी आये भवन में ॥
आये भवन में आप सुहाजी,
गावें खुशी का तराना खुशी का तराना, हो समधी आये भवन में ॥
हमरी हम दीन कुटी का भोजन,
रुचि से भोग लगाना हां भोग लगाना हो समधी आये भवन में ॥
प्रेम की मिठनी पान फूल से
आये तुम्हें नजराना नहीं ठुकराना हो समधी आये भवन में ॥
करो स्वीकार हम अपना कर,
हमरी हो बात निभाना जैसे भी निभाना हो समधी आये भवन में ॥
शोभा सजती समधी पाकर
मन है खुशी से दीवाना खुशी से दीवाना हो समधी आये भवन में ॥
धन्य धन्य हैं भाग सभी हम
हँसकर हँसाते आना हँसाते आना हो समधी आये भवन में ॥
हम बलिहारे बार बार हैं
आना कभी फिर आना हो भूल न जाना हो समधी आये भवन में ॥

---

x	०	x	०
मा –	साग –गा – ग	गम –प – पम	मपप –ग रे रे
आ जS	कैS Sसा S स	मय Sहै S सुS	हाSS Sना S स
गम प पप	मप म ग रे	रे –म ग रे	नि –सा ग रे
मय Sहै S सुS	हाS S ना S	हो SS सम धी	हो SS सम धी
ध नि सा –	– –		
भ व न म S	S S आज कैसा समय है सुहाना समय है सुहाना हो समधी		
नि –सा ग रे ध नि सा –			
आ Sये S भ व न में S			

बन्ना

[ताल कहरवा]

मेरा सुन्दर है राजकुमार बलि बलि जायें री।
सिर मोर पगड़ी चमकीली, भोली सी चितवन अँखियाँ रसीली।
बाँका रंगीला कुमार बलि बलि जायें री॥
माथे पे चंदन का टीका छबीला अंग में सोहे जामा रंगीला।
महके चमेली के हार बलि-बलि जायें री॥
मनमें छिपी आशायें थीं सुन्दर मधुर खिली मुस्कान मनोहर।
लिये प्राणों का है भंडार बलि-बलि जायें री॥
प्रेम बहिन है छवि न अघाती, नहीं वो मनमें फूली समाती।
भाभी करे मनुहार, बलि-बलि जायें री॥
सुखी हो मात बलायें लेती आज निछावर सब कुछ देती।
होवे पिता हैं निसार बलि-बलि जायें री॥

×				०				×				०			
						सा	नि़	सा	-ग	-	ग	ग	मं	प	ध
						मे	रा	सु	न्दर	ऽ	है	रा	ऽ	ज	कु
पमं	प	ग	ग	ग	मं	प	ध	पमं	प	ग	रे	ग़रे	गरे	सा	नि़
माऽ	ऽ	ऽ	र	ब	लि	ब	लि	जाऽ	ऽ	यें	ऽ	रीऽ	ऽऽ	मे	रा
सा	-ग	-	ग	ग	मं	प	ध	पमं	प	-	-	-	-	-	-
सु	न्दर	ऽ	है	रा	ऽ	ज	कु	माऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽर
नि	निध	धनि	रेंसां	निध	नि	प	प	ग	रे	ग	प	रे	गरे	सा	-
सि	रऽ	मोऽ	ऽऽ	रऽ	ऽ	प	ग	ड़ी	ऽ	च	म	की	ऽऽ	ली	ऽ
नि	ध	धनि	रेंसां	नि	नि	प	प	गरे	-ग	-	प	रे	गरे	सा	नि़
भो	ऽ	लीऽ	ऽऽ	चि	त	व	न	अँखि	ऽयाँ	ऽ	र	सी	ऽऽ	ली	ऽ
सा	-ग	-	ग	ग	मं	प	ध	पमं	प	ग	ग				
बाँ	ऽका	ऽ	र	गी	ऽ	ला	कु	माऽ	ऽ	ऽ	र	बलि बलि जायें री			

मेरा सुन्दर है
(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बनेंगे)

बन्ना

आज सलोना कुमार भा चांद हमारा, बना बन्ना प्यारा।
चंचल सा तन पर सांवर बदन पर छाया है अनुपम रूप मनोहर।
मेरा खिला सुकुमार गुलाब सा प्यारा नयनों का तारा॥
देख के सुन्दर सी मोहनी सूरत मन आज मेरा खुशी से डोलत।
रक्षा करें करतार गुलाब सा प्यारा नयनन का तारा॥
मेरी सभी आशाओं का पालक भाल तिलक है मन हरने वाला।
जाऊं मैं बलि हर बार गुलाब सा प्यारा नयना का तारा॥
'वैराग' कुल गौरव कुल का रतन है, मेरे जीवन का सहारा ये धन है।
मनाऊंगा ये जीवन हार, गुलाब सा प्यारा नयनों का तारा॥

×				×				×				×			
मा	-मा	प	प	पनि	-धु	-	म	गु	म	-	सा	सा	रे	गु	प
आ	ऽज	ऽ	स	लोऽ	ऽना	ऽ	कु	मा	ऽ	ऽर	भा	चां	ऽ	द	ह
गुम,गु	-रे	मा	मा	मा	रे	गु	प	गुम,गु	-रे	मा	-				
माऽऽ	ऽरा	ऽ	ब	ना	ऽ	ब	न्ना	प्याऽऽ	ऽऽ	रा	ऽ				
गुम	नि -धु	-	नि	मा	मां	सां	सां	नि	-मां	-	रें	नि	मां	धु	प
चंऽ	ऽचल	ऽ	से	त	न	प	र	सां	ऽवर	ऽ	ब	द	न	प	र
गुम	नि धु	-	नि	धुनि,सा	मा	मां	मां	मांनि	-मा	-	रें	नि	मां	धु	मप
छाऽ	ऽया	ऽ	है	अऽऽ	नु	प	म	रुऽ	ऽप	ऽ	म	नो	ऽ	ह	रऽ
मा	-मा	प	प	प	-नि	धु	पम	गु	म	-	मा	मा	रे	गु	प
मे	ऽरा	ऽ	खि	ला	ऽऽ	सु	कुऽ	मा	ऽ	ऽर	गु	ला	ऽ	ब	सा
गुम,गु	-रे	मा	मा	मा	रे	गु	प	गुम,गु	-रे	मा	-				
प्याऽऽ	ऽरा	ऽ	न	य	नों	का	ऽ	ताऽऽ	ऽऽ	रा	ऽ	आज सलोना कुमार —			

(शेष अन्तरे भी इन्हीं स्वरों पर गायें)

पध	सां	ऩि	ध	प	ध	म	ग	रे	ग	पध	प
वाऽ	ऽ	गों	ऽ	म	ऽ	था	ऽ	ई	ऽ	वऽ	ऽ
प म	–	–	–	म	प	ग॒	–	सा	रे	ऩि	ध
हा	ऽ	ऽ	ऽर	मु	ऽ	रा	ऽ	वों	ऽ	न	ऽ
ध॒	ऩि	सा	–	सा	–	ग	–	म	ग	म	प
सी	ऽ	पी	ऽ	मु	ऽ	री	ऽ	की	ऽ	फु	ऽ
ग॒	रे	सा									
हा	ऽ	ऽर	स्थाई पर आयें – "								

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गायें)

बन्ना

(ताल दादरा)

है आन शान वाला बन्ना मेरा हरियाला।
हो धीर हो गम्भीर बनो, तेज में रणधीर बनो।
सच्चे कर्मवीर बन, ले ज्ञान का उजाला॥
दृढ़ होके अपने पथ पर, हो बनके सदाचारी।
बढ़ते चलोगे आगे गुण शील बुद्धि वाला॥
आशीष ले गुरुजन की तलवार दया धर्म की।
प्रतिमा तुम्हारी चमकी पहन प्रेम की है माला॥
दुनिया की आज निधियाँ झोली में हों तुम्हारी।
शुभ कामना हमारी, जग में करो उजियाला॥
लाला सजा के भारी, आओ दुल्हन ले प्यारी।
जोड़ी अमर तुम्हारी प्रभू हो सदा रखवाला॥

×			०			×			०		
				म	प	गु	–	रे	नि	प	प
				है	ऽ	आ	ऽ	न	शा	ऽ	न
नि	–	सा	–	मा	–	ग	रे	ग	म	ध	प
ला	ऽ	ला	ऽ	बन्	ऽ	ना	ऽ	मे	रा	ह	रि
गु	रे	सा	–								
या	ऽ	ला	ऽ								
				प	–	म	ध	प	म	ग	म
				हो	ऽ	धी	ऽ	र	हो	गं	ऽ
म	प	प	प	प	–	पनि	–	नि	सां	सां	रें
भी	ऽ	र	ब	नो	ऽ	तेऽ	ऽ	ज	म	र	ण
नि	सां	नि	नि	ध	प	नि	–	नि	नि	नि	नि
धी	ऽ	र	ब	ना	ऽ	स	ऽ	च्चे	क	र	म
ध	सां	नि	ध	प	–	ग	–	ग	गम	धप	प
वी	ऽ	र	बन	ले	ऽ	ज्ञा	ऽ	न	काऽ	ऽऽ	उ
गु	रे	सा	–								
जा	ऽ	ला	ऽ है आन शान वाला …								

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गायें)

बन्ना

(ताल दादरा)

शहज़ादे पर छाई बहार है आज कुदरत भी सारी बलिहार है।
घुँघराले बालों पर पेंचा गुलाबी, सेहरे की लड़ियाँ कैसी मेहराबी॥
शहज़ादा रंगीला दिलदार है॥
चितवन है मोती बड़ी मतवाली हाथों की लाली तुम्हारी निराली।
दूल्हा भाभी नहिं भी निसार है॥
बाँकी सूरत पर वारी हम ओसे लाखो परी सी दुल्हन मचलके।
सदा आये चमन में बहार है॥
तेरी जिन्दगी हर खुशियों में खेले, आयें न कोई कभी भी झमेले।
तुम्हें दिन ये मुबारक हज़ार है॥

×			०			×			०		
			रे	म	प	ग़	–	सा	रे	नि़	ध
			शा	ह	ऽ	ज़ा	ऽ	दे	ऽ	प	र
ध	नि़	सा	–	सा	–	ग	–	ग	म	ग	म
छा	ऽ	ई	ऽ	ब	ऽ	हा	ऽ	र	है	ऽ	ऽ
रे	ग़	सारे	रे	म	प	ग़	ग़	सा	रे	नि़	ध
ऽ	ऽ	ऽऽ	आ	ऽ	ऽज	कु	द	र	त	भी	ऽ
म	नि़	सा	–	सा	सा	ग	–	ग	म	ग	म
सा	ऽ	री	ऽ	ब	लि	हा	ऽ	र	है	ऽ	ऽ
रे	ग़	सारे									
ऽ	ऽ	ऽ									
			–	–	–	म	म	म	ग	म	–
			•	•	•	घु	घ	रा	ऽ	ले	ऽ
म	प	प	–	प	प	म	प	ध	–	नि	–
बा	ऽ	लों	ऽ	प	र	पें	ऽ	चा	ऽ	गु	ऽ

घोड़ी

(ताल दादरा)

आज बैठे घोड़ी पे किशोर, लिये हाथों में है बागडोर।
आया दिवस है खुशी का ले साज, सुहाना है आज।
दूल्हा बना हो तुम सुन्दर शुभ भोर॥
देखा बहार ने जीवन बसंत, लेके खुशियां अनन्त।
मन में उमंगे हैं छेड़ी हिलोर॥
जाग उठे सारे सपन रँगीले सुन्दर सजीले।
आशायें मुस्काईं नाचे मनमोर॥
भाल सजा के टीका गुलाबी, फबती है भाभी।
लगो किसके चन्दा हो तुम मनके चकोर॥

×			०			×					
			प	ध	प	म	ग	म	–	ग॒	रे
			आ	ऽ	ज	बै	ऽ	ठे	ऽ	घो	ऽ
सा	रे	रे	म	म	–	प	–	–	प	ध	प
ड़ी	ऽ	पे	ऽ	कि	ऽ	शो	ऽ	ऽर	लि	ये	ऽ
म	ग	म	–	ग॒	रे	सा	रे	रे	म	म	–
हा	ऽ	थों	ऽ	म	ऽ	है	ऽ	बा	ऽ	ग	ऽ
प	–	–				प	–	–	–	–	–
डो	ऽ	ऽर	आज बैठे घोड़ी पे कि			शो	ऽ	ऽर	•	•	•
म	प	प	रें	रें	–	रें	रें	रें	–	रें	–
आ	ऽ	या	ऽ	दि	ऽ	व	स	है	ऽ	खु	ऽ
नि	प	प	ध	प	ध	पध	सांरें	मंगं	–	गं	–
शीऽ	ऽ	का	ऽ	ले	ऽ	साऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽज	सु	ऽ
गं	मा	सां	रें	नि	–	सांरें	निसां	–	–	–	–
हा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	आऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽज
प	सां	सां	–	सां	रें	(सा)नि	–	नि	–	ध	प
दू	ऽ	ल्हा	ऽ	ब	ऽ	ना	ऽ	हो	ऽ	तु	म
ध	प	प	ध	प	म	म	प	–			
सु	ऽ	न्द	र	शु	भ	भो	ऽ	ऽर	आज बैठ घोड़ी— ···		

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाइये) ———

घोड़ी

(ताल दादरा)

लाल कुँवर जी चले घोड़ी चढ़ के॥
हाथों में ले बाग डोर पकड़ के॥
लगता सुहाना शीश पर चीरा, कैसा चमकता कलंगी का हीरा।
बन ठन चले लाल सँवर सुघड़ के॥
लटकें बाल घाटी माथ को चूम, केसर कसार का तिलक मन झूमे।
बन ठन चले लाल सँवर सुघड़ के॥
कमर की कटार तेग मन को हर ले रही मोन प्यारा नगर भर।
बन ठन चले लाल सँवर सुघड़ के॥
जामा कसूमल पटुका सुहावन कर में बँधा कंगन अति पावन।
बन ठन चले लाल सँवर सुघड़ के॥
निरखि निरखि छवि मौन भमाती नयनों में माल मरे बलि जाती।
बन ठन चले लाल सँवर सुघड़ के॥

×			०			×					
नि	मा	मा	म	म	ग	म	प	प	म	म	ग
ला	ऽ	ल	ऽ	कुँ	ऽ	व	र	जी	ऽ	च	ऽ
सा	रे	ग	–	(प)म	–	रे	रे	सा	नि	सा	–
ले	ऽ	घो	ऽ	ड़ी	ऽ	च	ढ़	ऽ	के	ऽ	ऽ
नि	मा	मा	म	म	ग	म	प	प	म	म	ग
हा	ऽ	थों	ऽ	मे	ऽ	ले	ऽ	बा	ऽ	ग	ऽ
सा	रे	ग	–	(प)म	–	रे	रे	सा	नि	सा	–
डो	ऽ	र	ऽ	प	ऽ	क	ड़	ऽ	के	ऽ	ऽ
नि	मा	मा	प	प	–	प	–	प	–	प	–
ल	ग	ता	ऽ	सु	ऽ	हा	ऽ	ना	ऽ	शी	ऽ
प	प	ध	नि	नि	ध	प	नि	ध	प	म	प
ऽ	श	ऽ	प	र	ऽ	ची	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ
ग	ग	ग	सा	ग	–	प	–	प	–	प	–
ल	ग	ता	ऽ	सु	ऽ	हा	ऽ	ना	ऽ	शी	ऽ

दुलहिन आने पर

[ताल कहरवा]

आओ मंगल गीत जगायें ।
कर स्वागत दुलहन पर लायें ॥
करते स्वागत "शुभ" तुम्हारा ।
जगमग भवन आलोकित सारा ॥
घर-घर खुशियाँ आज लुटायें ॥
तुम से प्रकाश हो आई सजना ।
घर घर में उल्लास है कितना ॥
आशाओं के दीप जलाये ॥
चिरदिन रहे मन सौरभ तेरा ।
सदा सौभाग्य प्रिय का सवेरा ॥
शुभ मंगल सुनाता आज ॥
गूँथ प्यार और प्रीति की लड़ियाँ ।
बना लिया संग है रँगरलियाँ ॥
स्वागत तुम सादर अनाम ॥

×				×				×				×			
नि	सा	म	ग	प	मं	ध	प	ग	म	रे	मा	नि	रे	मा	–
आ	ऽ	ओ	ऽ	मं	ऽ	ग	ल	गी	ऽ	त	ज	गा	ऽ	यें	ऽ
नि	सा	म	ग	प	मं	ध	प	ग	म	रे	मा	नि	रे	मा	–
क	र	स्वा	ऽ	ग	त	दु	ल	ह	न	प	र	ला	ऽ	यें	ऽ
प	मां	मां	निर	ध	मि	मां	रें	नि	मां	ध	प	मं	ध	प	–
क	र	त	ऽऽ	स्वा	ऽ	ग	त	शु	भ	ऽ	तु	म्हा	ऽ	रा	ऽ
प	मां	मा	निध	प	नि	मा	रें	नि	सां	ध	प	मं	ध	प	–
ज	ग	म	गऽ	भ	व	न	आ	लो	ऽ	कि	त	सा	ऽ	रा	ऽ
नि	सां	ध	ध	मग	मंध	प	–	ग	म	रे	मा	नि	रे	मा	–
घ	र	घ	र	खुऽ	शिऽ	यां	ऽ	आ	ऽ	ज	लु	टा	ऽ	यें	ऽ

आओ मंगल गीत – – –।

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गायें)

दुलहिन के आने पर

(ताल कहरवा)

गावें खुशी के गीत री घर दुलहिन आई ।
आज पिया घर आई हो आशा राह तके थे प्रेम की आशा ।
तेरे जीवन के मीत री घर दुलहिन आई ॥
लाज शरम का घूँघट खोले, नयना आँख मिचौनी खेले ।
दिल में छिपा के प्रीति री घर दुलहिन आई ॥
सुन्दर मुखड़ा लाज लजावें, रात खुशी के नगमे गावें ।
तारा से ले संगीत री घर दुलहिन आई ॥
कर अठखेली पिया मन प्यारी, दिल की छुरी जागीर तुम्हारी ।
हुई है किसी की जीत री घर दुलहिन आई ॥
सास ससुर की बनो दुलारी पूजे माँग आशीष हमारी ।
कुल की यही है रीत री, घर दुलहिन आई ॥

×	×	×	×
सग ग ग	ग रे गम पध	ग –म रे रेग	सारे रेग सानि सा
गाऽ वें खु	शी ऽ केऽ ऽऽ	गी ऽत री घर	दुल हन आऽ ई
–			
ऽ			
ग प प	पध निध धनि सां	– निसां निध ध	प मं मंध प –
आ ज पि	याऽ ऽऽ घऽ र	ऽ आऽ ऽई हो	पा ऽऽ सा ऽ
– ग ग प	पध निध धनि रेंसां	– निसां निध ध	मं मंध प –
ऽ रा ह त	केऽ ऽऽ थेऽ ऽऽ	ऽ प्रेऽ मऽ की	आ ऽऽ शा ऽ
– साग ग ग	ग रे गम पध	ग –म रे रेग	मारे रेग मानि सा
ऽ तेऽ रे जी	व न केऽ ऽऽ	मीऽ त री घर	दुल हन आऽ ई
–			
ऽ गावें खुशी के गीत ...... ।			

(शेष अन्तरे भी प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

दुलहिन आने पर

(ताल दादरा)

सुरियों ने सींची ये भाग फुलवार री।
आई गृह लक्ष्मी हमारे है द्वार री॥
मीठी सी मनहर मुस्कान निराली।
मद भरे नयनों में लाज की लाली॥
सुन्दर सलोने से गात सुकुमार री।
छम छम सी करती आँगन में फिरती।
खुशियाँ हृदय में सभी के है भरती॥
मन मोह लेती पायल की झनकार री॥
मन से छिपी सी मधुर अभिलाषा।
समझागी आज प्रेम परिभाषा॥
मनमें बसा के हो रसिया का प्यार री।
आज सुहाग की आई है रजनी।
दीप 'मिलन' के जलाओगी सजनी॥
होवे सुहागी प्रिय 'भोर' तुम्हार री॥
लाज घूँघट मुखचन्द्र छिपो क्यों।
चाँद को गृहण लगाय दियो क्या?
चंचल नयन करें छिप छिप के वार री॥

×			•			×			•		
नि़	सा	सा	म	म	ग़ु	म	प	प	म	म	ग़ु
सु	रि	यों	ऽ	ने	ऽ	सीं	ऽ	ची	ऽ	ये	ऽ
सा	–	रे	ग़ु	प	म	रे	–	सा	नि़	सा	–
भा	ऽ	ग	फु	ल	ऽ	वा	ऽ	र	री	ऽ	ऽ
नि़	सा	सा	म	म	ग़ु	म	प	प	म	म	ग़ु
आ	ऽ	ई	ऽ	गृ	ह	ल	क्ष्मी	मी	ऽ	ह	ऽ
सा	–	रे	ग़ु	प	म	रे	–	सा	नि़	सा	–
मा	ऽ	रे	है	ऽ	ऽ	द्वा	ऽ	र	री	ऽ	ऽ
नि़	सा	सा	प	प	–	प	प	प	–	प	प
मी	ऽ	ठी	ऽ	सी	ऽ	म	न	हर	ऽ	मु	स

प	–	धु	नि	–	सा	धु	नि	धु	प	म	प
फा	ऽ	ऽ	न	ऽ	नि	रा	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ऽ
गु	–	गु	मा	गु	–	प	प	प	–	प	प
मो	ऽ	री	ऽ	मी	ऽ	म	न	हर	ऽ	सु	म
प	–	धु	नि	–	सां	धु	नि	धु	प	म	प
रा	ऽ	ऽ	न	ऽ	नि	रा	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ऽ
प	धु	–	नि	सां	–	निसां	गुं	सां	नि	नि	–
म	द	ऽ	भ	र	ऽ	नयऽ	ऽ	नों	ऽ	में	ऽ
प	–	धु	नि	सां	नि	धु	–	प	प	–	–
सा	ऽ	ऽ	ज	री	ऽ	सा	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ऽ
नि	मा	सा	प	प	–	प	धु	प	म	प	–
सु	ऽ	हर	ऽ	म	ऽ	सा	ऽ	ने	ऽ	म	ऽ
गु	–	सा	गु	प	म	रे	–	मा	नि	सा	–
गा	ऽ	व	सु	कु	ऽ	मा	ऽ	र	री	ऽ	ऽ

मुरलियों मे सोची– –

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाय)

जच्चा

(ताल कहरवा)

आज खुशी है भारी ललन जन्मा री ये दिन सुखकारी।
सोने चाँदी के दीप जलाओ आओ री सब मिल मंगल गाओ।
जायें सभी बलिहारी खुशी में मतवारी ललन पर वारी॥
फूलसा मुखड़ा देखके प्यारा जायें भूल हम दुखड़ा सारा।
गोदी में खेले हमारी अमर हो हमारी, सलौने की प्यारी॥
नन्हे कुँवर तुम्हे गोदी में झेले मन आज चंचल खुशी में फूले।
ले ले बलैयां हारी छवि है प्यारी, ललन जी तुम्हारी॥
दीपक है कुल का हमारा सलोना, प्यारा सभी का दुलारा खिलौना।
अँखियां बड़ी कजरारी चितवन ये प्यारी, कैसी मनहारी॥
चमकेगा बन भारत का सितारा चंदा से मुखपर सभी कुछ वारा।
फूले फलेगी क्यारी, जीवन की तुम्हारी आशीष हमारी॥

×	×	× म	×
निसा –सा प प	प –नि धप म	मप –प – ग	सा रे ग प
आऽ ऽज ऽ खु	शी ऽऽ हैऽ ऽ	भाऽ ऽरी ऽ ल	ल न ज न
गम,ग –रे सा मा	मा रे ग प	गम,ग –रे सा –	
माऽऽ ऽरी ऽ ये	दि न सु ख	काऽऽ ऽऽ री ऽ	
नि			
गम –ध – नि	सां – सां –	सांनि –सां – रें	नि सां ध प
सोऽ ऽने ऽ चां	दी ऽ के ऽ	दीऽ ऽप ऽ ज	ला ऽ ओ ऽ
नि			
गम –ध – नि	सा सा सां सां	सांनि –सां – रें	नि सां ध प
आऽ ऽओ ऽ री	स ब मि ल	मंऽ ऽग ऽ ल	गा ऽ ओ ऽ
		म	
निसा –सा प प	प –नि धप म	मप –प – ग	सा रे ग प
जाऽ ऽयें ऽ स	भी ऽऽ बऽ लि	हाऽ ऽरी ऽ खु	शी म म त
गमग –रे सा सा	सा रे ग प	गमग –रे सा –	
वाऽऽ ऽरी ऽ ल	ल न प र	वाऽऽ ऽऽ री ऽ	आज खुशी है

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

जच्चा

(ताल कहरवा)

बधाई लाई आज सुहागिन अँगना।

ठुमक ठुमक कब खेलेगा ललना।
पूरा हुआ आज मेरा यह सपना।।

मृदु मुस्कान अधर पर खेले।
चितवन लाज औ भोले से नयना।।

कब लालन मेरे मुख से उचारें।
निपट रसीले मधुर से बयना।।

एक हाथ नन्हा मस्तक सँवारे।
दूजे हाथ पकड़ लाल झुँझना।।

किस किस की इसे नजर लगी है।
खीझ रहे आज मेरे क्यों ललना।।

चन्दा से मुख पर बलि बलिजाऊँ।
भइया की गोदी का झूलेगा पलना।।

×	×	×	×
माम	गु रेमा म नि	सा –सा – सा	माग गरे ग मप,म
बS	धा ईS ला ई	आ Sज S सु	हाS SS ग नSS
गुग –रे सा साम	गु रेमा प नि	सा –सा – सा	साग गरे ग मप,म
अंग Sना S बS	धा ईS ला ई	आ Sज S सु	हाS SS ग नSS
गु गुरे सा –			
अँ गS ना S			
	प प ग म	प प प प	नि –सां – रें
	ठु म क ठु	म क क ब	खे Sले S गा
सा नि नि ध प	मध पम ग म	म प प प प	नि –सां – रें
ल ल ना S	ठुS मS क ठु	म क क ब	खे Sले S गा
सा नि नि ध प	नि –नि – नि	पधसानि –ध प प	गम –गम धप– प
ल ल ना S	पू Sरा S हु	आSSS Sआ S ज	मेS SरS SSS या
गु रे सा –		गुरे –सा –	
स प ना S	पूरा हुआ आज मेरा यो	स Sना S	बधाई लाई......

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

जच्चा

(ताल दादरा)

आज खुशियों का मेरी खजाना मिला ॥
नज़र का मेरे नूर, ज़िन्दगी का सहारा,
करने मेरी दुनिया में आया है उजारा ।
मेरी क़िस्मत है जागी नज़राना मिला ॥
अरमान सँजाये हुये जो दिल में थे कभी,
हैं आज हुये पूरे सोचे थे जो सभी ।
उम्मीदों का मोहक तराना मिला ॥
झूलेगा मेरी गोद सदा आस का तारा
पढ़ता रहे यह हर दिन मन सबका दुलारा ।
मेरा चंदा ये कैसा सुहाना मिला ॥
ये फूल सलामत रहे मुर्झाये न कभी
सबसे दुआयें मिल के हैं आज तो सभी ।
नाज़ करने का सब का बहाना मिला ॥

×			०			×			०		
			रे	म	प	ग॒	रे	सा	रे	नि॒	ध॒
			आ	ऽ	ऽज	खु	शि	यों	ऽ	का	ऽ
ध॒	नि॒	सा	–	सा	–	ग	–	म	ग	म	प
मे	ऽ	री	ऽ	ख	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	मि	ऽ
ग॒	रे	सा									
ला	ऽ	ऽ									
			–	ग	म	प	–	प	प	ध	प
			•	न	ज़	रों	ऽ	का	मे	रे	ऽ
पध	सां	नि॒	ध	प	प	प	ध	प	म	ग	प
नूऽ	ऽ	र	ज़िं	ऽ	द	गी	ऽ	का	स	हा	ऽ
म	–	–	–	ग	म	प	–	प	प	ध	प
रा	ऽ	ऽ	ऽ	क	र	मे	ऽ	मे	री	दु	नि

पध	सां	नि	ध	प	प	प	ध	प	म	ग	प
बोऽ	ऽ	म	भा	ऽ	या	है	ऽ	व	भा	ऽ	ऽ
म	–	–	रे	म	प	ग॒	रे	सा	रे	नि॒	ध॒
रा	ऽ	ऽ	मे	री	ऽ	कि	म	म	त	है	ऽ
ध॒	नि॒	सा	–	सा	सा	ग	–	म	ग	म	प
जा	ऽ	गी	ऽ	न	भ	रा	ऽ	ना	ऽ	मि	ऽ
ग॒	रे	सा									
बा	ऽ	ऽ	श्याम सुरियों ··· ··								

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान हैं)

जच्चा

(ताल कहरवा)

देखो हमारा देखो चाँद आया, चाँद आया।
जीवन की खुशियाँ लेके आज अनोखा आया॥

सूनी पड़ी थी कब से बगिया हमारी।
आज खिली है मेरी मग फुलवारी॥
बगिया का फूल मेरा सुन्दर सा गुलाब आया॥

खेले आंगन म मेरे नन्हा सा सुन्दर छौना।
चमक उठा है मेरे *प्राणों का कोना-कोना*॥
मेरा चंदा तो देखो चांद के अनुहार आया॥

कुटिया में चमका मेरी नन्हा सितारा।
जीवन का मेरे तूही आज सहारा॥
आशा के दीपक मेरे आज जलाने आया॥

प्रीति प्यार के नित ही हिंडोले झूले।
भूली हूँ सब कुछ मैं तो देख तुझे है भोले॥
अपने सदन मे मर के अमर संदेशा लाया॥

सुख भरी नींद सोय मीठे सपने में खोवे।
खुशियां जीवन में सँजोये लम्बी उमर होवे॥
भाग मेरे वे सोये आज जगाने आया॥

—

×				×				×				×				
	सा	ग॒	म	प	पनि॒	धप	म	मग॒	-प	मग॒	रे	ग॒म	मग॒	रे॒सा	सा	
	दे	खो	ह	मा	राऽ	देऽ	खो	चाऽ	ऽद	आऽ	या	चाऽ	ऽद	आऽ	या	
-	मग॒	रे॒	सानि॒	नि॒सा	सानि॒	सारे॒	ग॒म	म	ग॒प	मग॒	रे॒	सारे॒	मग॒	रे॒सा	सा	
ऽ	जीऽ	वन	कीऽ	खुशि	याऽ	लेऽ	केऽ	ऽ	आऽ	जऽ	अ	नेऽ	कोंऽ	आऽ	या	
-																
ऽ																

	गुम	धु	नि	सां	सा	ममा	मा		निनि	नि	सा	निरें	निसां	धु	प
	सुऽ	नी	प	री	यो	ऊब	म	ऽ	बगि	या	इ	माऽ	ऽऽ	री	ऽ
-	गुम	धु	नि	सां	मां	मां	सां	-	निनि	नि	मा	निरें	निमां	धु	प
ऽ	श्याऽ	ज	लि	लो	है	मे	री	ऽ	मग	फु	स	याऽ	ऽऽ	री	ऽ
-	साप	माप	प	पधु	सांनि	धुप	म	मधु	पम	ग	गरे	गप	मग	रेमा	मा
ऽ	बगि	याऽ	का	फूऽ	ऽल	मेऽ	रा	सुऽ	दर	सा	गुऽ	लाऽ	ऽल	श्याऽ	मा
-	मा	ग	म	प	प	प	पसा	प							
ऽ	है	सा	इ	मा	रा	तू	याऽ	ऽ	देश्या	हमारा		— — —			

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान गाइये)

जच्चा

(ताल कहरवा)

देखो कैसे सुहाने हैं आज, खड़े-खड़े मैं बन्दनवार।
घड़ी शुभ है ये मालिक सरकार बधाई ले आई दरबार ॥
महारानी कुँवर जी मुबारक तुम्हें।
दो आज अशर्फी इनाम हमें ॥
उम्मीदों से आई हूँ द्वार बधाई ले आई दरबार ॥
देखो अँगना में चंदा सुहाये है आज।
घड़ी आई है लेके सुखों का यह साज ॥
अजी देने का करिये इकरार बधाई ले आई दरबार ॥
है अँगना बहारों का मेला रहे।
मुन्ने जीवन में तेरे झमेला रहे ॥
ठुमक खेलें यह नन्हें सरदार, बधाई ले आई दरबार ॥
जुग-जुग जीवें ये सुन्दर से प्यारे कुँवर।
सदा प्यार के झुलवे रहेंगे चँवर ॥
वारी जाऊँ मैं आज सरकार, बधाई ले आई दरबार ॥

—✶—

× × × ×

ग ग | रेगप –प म प | गरे –ग – मा निमागरे – सा नि
दे खो कैऽऽ ऽसे ऽ सु हाऽ ऽने ऽ हैं आऽऽऽ ऽज खा ई

निमा –रे गसा मारे रेगप –ग रे ग मा – ग ग रेगप –प म म
खाऽ ऽई ऽऽ मैंऽ | बऽऽ ऽन ऽ न वा ऽर घ ड़ी शुभऽऽ ऽके ऽ ये

गर –ग – मा | निमागरे – – मा निमा –रे गसा सारे | रेगप –ग रे ग
माऽ ऽलिक ऽ सर | काऽऽऽ ऽ ऽर ब | धाऽ ऽई ऽऽ लेऽ | आऽऽ ऽई ऽ दर

मा –

		सा	रे	सारे,ग	—ग	–	ग	गग	—म	ग	म	रेग	—,रेग	प	प
		म	ह	एऽऽ	ऽनी	ऽ	कुं	वर	ऽजी	ऽ	मु	खाऽ	ऽरऽ	ऽऽ	तु
म	ग	मग	रे	मारे,ग	—ग	–	ग	गग	—म	ग	म	रेग	–रेग	प	प
मों	ऽ	ह	दा	आऽऽ	ऽम	ऽ	म	राग	ऽकी	ऽ	ह	नाऽ	ऽमऽ	ऽ	ह
म	ग	–	मं	मंप	–पम	प	म	गरे	—ग	–	मा	निमागरे	मानि	–	नि
मह	ऽ	ऽ	उ	म्मीऽ	ऽरोंऽ	ऽ	म	भाऽ	ऽई	ऽ	ई	हऽऽऽ	ऽऽ	ऽर	न
नि	मा	रेग	सारे	म (रे)	—ग	रे	रेग	सा	—मा						
धा	ई	केऽ	ऽऽ	मा	ऽई	ऽ	पर	मा	ऽर रला कैसे सुहाने						

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

जच्चा

(ताल कहरवा)

चाँद सा नन्हा मेरा फूलों सा खिल-खिल जाये।
देख मेरे मन आज आनन्द छाये॥
धन्य-धन्य हुई आज ये मैया।
खेले माँ की गोद कन्हैया॥
मधुर हँसी मुस्काये, मैया है बलि-बलि जाये॥
लाल की भोली रस भरी बतियाँ।
मन को लुभायें बड़ी-बड़ी अँखियाँ॥
रूप अनूप सुहाये मैया है बलि-बलि जाये॥
चन्द्रकला सी ज्योति निशदिन।
बढ़े माँ का यह जीवन धन॥
कभी न ये कुम्हलाये मैया है बलि-बलि जाये॥

—•••—

×				×				×				×				
	सारे	ध़	नि़	सा	रे	सानि़	सा	-	ग	म	प	रेम	गुरे	सानि	सा	
	चाँऽ	ऽद	सा	न	न्हा	मेऽ	रा	ऽ	फू	लों	सा	खिल	खिल	जाऽ	ये	
-	सारे	ध	नि़	सा	रे	सानि़	सा	-	ग	म	प	रेम	गुरे	सानि़	सा	-
ऽ	दऽ	ऽख	मे	रे	ऽ	मऽ	न	ऽ	आ	ज	आ	नंऽ	ऽद	छाऽ	ये	ऽ
	मिसा	ग	म	प	प	प	प	-	ग	म	धप	गु	-रे	मानि	सा	
	धऽ	न्य	ध	ऽ	न्य	हु	ई	ऽ	आ	ज	येऽ	मै	ऽऽ	याऽ	ऽ	
-	मिसा	ग	म	गम	प	प	-	-	ग	म	धप	गु	-रे	मानि	सा	
ऽ	खेऽ	ले	ऽ	माँऽ	ऽ	की	ऽ	ऽ	गो	द	कऽ	न्है	ऽऽ	याऽ	ऽ	
-	नि	निनि	नि	ध	धसा	निध	प	-	ग	म	प	गम	गुरे	सानि	सा	
ऽ	म	धुर	हँ	सी	मुस	काऽ	ये	ऽ	मै	या	है	बलि	बलि	जाऽ	ऽये	

-

ऽ चाँद सा नन्हा मेरा ...... ।

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान चलेंगे)

नाच का गीत

(ताल कहरवा)

करत रार नहिं माने बिहारी श्याम।
जब पनघट गई पकड़ी गगर मारी।
छोड़े हरजाई मैं तो गई रे हार, बड़ो ढीट मुरारी श्याम ॥
बिनती करत गई जोड़ो गैल मारी।
छोड़े न कन्हाई मैं तो गई रे हार, कैसा ये गिरधारी श्याम ॥
सुध को बिसर गई कैसे करूँ मोरी।
बँसिया बजाई, मैं तो गई रे हार ना माने बिहारी श्याम ॥

—•(⁀)•—

×				×				×				×			
पध	पध	म	म	रेग	रेग	सा	सा	(म)रे	–	म	प	मप	धनि	धप	–
कऽ	रऽ	त	रा	ऽऽ	रऽ	न	ही	मा	ऽ	ने	बि	हाऽ	रीऽ	श्याऽ	ऽम
म	प	नि	नि	सां	सां	नि	सां	रें	रेंमं	रें	सां	रें	नि	सां	सां
ज	ब	प	न	घ	ट	ग	ई	प	कऽ	ड़ो	ग	ग	र	मो	री
प	नि	सा	रें	नि	निध	प	प	पध	पध	म	म	रेग	रेग	सा	सा
छो	ड़े	ह	र	जा	ईऽ	मैं	तो	गऽ	ईऽ	रे	हा	ऽऽ	रऽ	ब	डो
रे	–	म	प	मप	धनि	धप	–								
ढी	ऽ	ट	मु	राऽ	रीऽ	श्याऽ	ऽम	करत रार	–			।			

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान बजेंगे)

नाच का गीत

(ताल दादरा)

मारो न पिचकारी रंग भरी हा हट छोड़ो कन्हाई।
मैं दधि बेचन जात वृन्दावन
मुरली की धुन भाई, हट छोड़ो कन्हाई॥
डारत रंग नन्दलाल साँवरे
चूनर मोरी भिगाई, हट छोड़ो कन्हाई॥
फोड़ मटकी दधि सब बिखरायो,
खेलत है हरजाई हट छोड़ो कन्हाई॥

—•—

×			०			×			०		
नि़	मा	सा	प	प	–	प	प	धु	प	धु	–
मा	ऽ	रो	ऽ	न	ऽ	पि	च	का	ऽ	री	ऽ
म	प	म	प	नि	–	धु	–	प	गु	रे	–
रं	ऽ	ग	भ	री	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ह	ट	ऽ
सा	रे	रे	म	म	–	म	प	म	गु	–	–
छो	ऽ	ड़	ऽ	क	ऽ	न्हा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ
प	–	–	प	प	नि	नि	–	–	नि	नि	–
मैं	ऽ	ऽ	द	धि	ऽ	बे	ऽ	ऽ	च	न	ऽ
नि	म	प	नि	नि	सा	निसा	रेंसां	–	नि	नि	धप
जा	ऽ	त	ऽ	वृ	ऽ	न्दाऽ	ऽऽ	ऽ	व	न	ऽऽ
गु	–	गु	प	प	–	प	–	म	प	धु	–
मु	ऽ	र	ऽ	ली	ऽ	की	ऽ	ऽ	धु	न	ऽ
म	प	प	म	गु	रे	सा	रे	रे	म	म	–
भा	ऽ	ई	ह	ट	ऽ	छो	ऽ	ड़ो	ऽ	क	ऽ
म	प	म	गु	–	–						
न्हा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	मारो न पिचकारी —					

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान)

गु	-र	सा	-	ग	-म	-	मप	गु	रे						
मा	ऽऽ	री	ऽ	बा	ऽर	ऽ	हऽ	मा	री						
										नि	मा	सागु	-रे	नि	मा
										पे	सा	मंऽ	ऽऽ	द	कु
मागु	-र	नि	मा	मागु	-सा	गु-	रेसा	नि	-	प	धप	म	पम	गु	मगु
माऽ	ऽर	ध	रे	पन	ऽप	टऽ	न्ट	धर	ऽ	ह	मऽ	म	रऽ	मे	नऽ
र	-	गु	म	गुम	गुरे	मा	सा	सा	-						
र	ऽ	भप	ता	भप	ऽनी	ऽ	ग	गर	ऽ						

(शेष अन्तरे प्रथम अन्तरे के समान हैं)

समाप्त